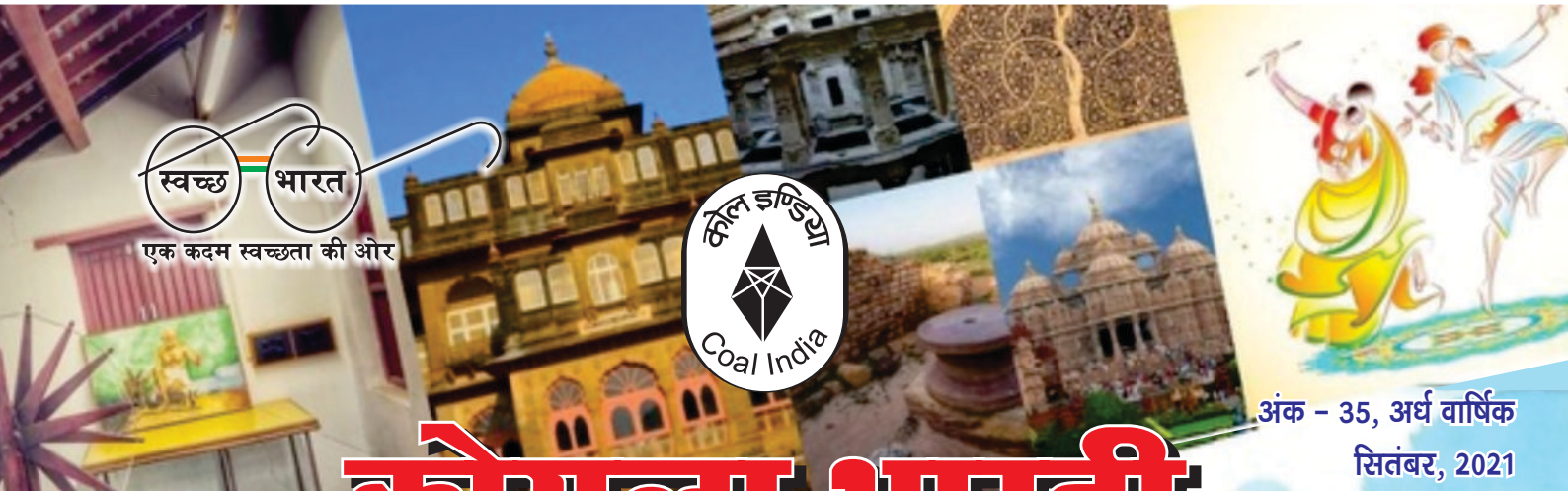

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

कोल इण्डिया Coal India

अंक - 35, अर्ध वार्षिक
सितंबर, 2021

कोयला भारती

बीसीसीएल की गृह पत्रिका

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

एक मिनीरत्न कंपनी

(कोल इण्डिया लिमिटेड का एक अंग)

कोयला भवन, कोयला नगर, धनबाद- 826005

Digital India
Power To Empower

कोल इंडिया अध्यक्ष का बीसीसीएल दौरा

कोल इण्डिया लिमिटेड के अध्यक्ष श्री प्रमोद अग्रवाल दिनांक 21.07.2021 को बीसीसीएल के समीक्षात्मक दौरे पर धनबाद पहुंचे। उनके धनबाद आगमन पर बीसीसीएल के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पी.एम. प्रसाद के साथ कंपनी के उच्चाधिकारियों द्वारा स्वागत किया गया। इस दौरान श्री अग्रवाल ने कंपनी प्रबंधन के साथ कोयला उत्पादन और भविष्य की कार्ययोजनाओं से संबंधित समीक्षा बैठक में भाग लिया। उन्होंने कोयला उत्पादन और प्रेषण बढ़ाने के लिए आवश्यक दिशानिर्देश भी दिए।

अपने धनबाद दौरे के समय अध्यक्ष महोदय ने एडवांस लाइफ सपोर्टिंग एम्बुलेंस (एएलएस) का शुरूआत करते हुए बीसीसीएल कर्मचारियों और धनबाद के लोगों को समर्पित किया। उन्होने कोयला नगर स्थित पंचवटी इको पार्क में पर्यावरण विभाग द्वारा आयोजित वृक्षारोपण कार्यक्रम में भी भाग लिया। इस दौरान बीसीसीएल के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पी.एम. प्रसाद, निदेशक तकनीकी (संचालन) श्री चंचल गोस्वामी, निदेशक (कार्मिक) श्री पी.वी.के.आर.एम.राव और मुख्य सतर्कता पदाधिकारी श्री कुमार अनिमेष भी उपस्थिति रहे।

विश्व पर्यावरण दिवस का आयोजन

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड में दिनांक 05.06.2021 को कोयला नगर स्थित पंचवटी इको पार्क में अध्यक्ष –सह- प्रबंध निदेशक श्री पी.एम. प्रसाद की अध्यक्षता में विश्व पर्यावरण दिवस का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम निदेशक (तकनीकी/संचालन) श्री चंचल गोस्वामी द्वारा सभी को पर्यावरण संरक्षण के लिए शपथ दिलाई गई । इस दौरान निदेशक (वित्त) श्री समीरन दत्ता, निदेशक (कार्मिक) श्री पी.वी.के.आर. मल्लिकार्जुन राव, मुख्य सतर्कता पदाधिकारी श्री कुमार अनिमेष के साथ ही विभागाध्यक्ष (पर्यावरण) और मुख्यालय के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा नेहरु कॉम्प्लेक्स के प्रांगण में वृक्षारोपण किया गया।

इस अवसर पर पर्यावरण के प्रति जागरूकता हेतु 'पर्यावरण दर्पण' पत्रिका का भी विमोचन किया गया। इस अवसर पर पर्यावरण विभाग द्वारा विभिन्न ऑनलाइन प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान कोविड-19 संबंधी दिशा- निर्देशों का पालन किया गया।

पी. एम. प्रसाद
अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक
P. M. Prasad
Chairman-cum-Managing Director

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड
एक मिनी रत्न कम्पनी
(कोल इण्डिया की सहायक कंपनी)
BHARAT COKING COAL LIMITED
A Mini Ratna Company
(A Subsidiary of Coal India Limited)
कोयला भवन, कोयला नगर / Koyla Bhawan, Koyla Nagar,
धनबाद /Dhanbad-826005

अध्यक्ष की कलम से

प्रिय साथियो,

हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित राजभाषा पखवाड़ा के अवसर पर प्रकाशित कंपनी की हिंदी पत्रिका 'कोयला भारती' के माध्यम से एक बार पुनः आपके बीच अपने विचार रखते हुए अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। सर्वप्रथम हिंदी दिवस के पावन अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं!

भारत एक बहुभाषी देश है और विविधता में एकता इसकी संस्कृति की प्रमुख पहचान है। देश में हजारों भाषाएं प्रचलित होने के बावजूद हिंदी के एक बड़े भू-भाग में बोले जाने और सम्पूर्ण देश में संपर्क भाषा के रूप में इसके व्यवहृत होने की वजह से संविधान निर्माताओं ने इसे राजभाषा के लिए सबसे उपयुक्त समझा और दिनांक 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को देश की राजभाषा के रूप में अपनाया।

एक भाषा के रूप में हिंदी हमारे देश की पहचान है। स्वतंत्रता आंदोलन में भी एक संपर्क भाषा के रूप में हिंदी ने बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है। हिंदी के महत्त्व को गुरुदेव रवींद्र नाथ ठाकुर ने बड़े सुंदर रूप में प्रस्तुत किया था। उन्होने कहा था कि भारतीय भाषाएं नदियाँ हैं और हिंदी महानदी। संविधान के अनुच्छेद 351 में भी हिंदी को भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाने की बात कही गयी है।

आज सूचना प्रौद्योगिकी के दौर में हिंदी वैश्विक स्तर पर एक प्रभावशाली भाषा बनकर उभरी है। हिंदी के इस महत्त्व को देखते हुए दिग्गज साफ्टवेयर निर्माता कंपनियाँ हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं में अपने उत्पादों को तैयार करवा रही हैं। टंकण कार्य से लेकर मशीन अनुवाद तक में उच्च स्तरीय कृत्रिम बुद्धिमता (एआई) के प्रयोग से हिंदी समेत सभी भारतीय भाषाओं में कंप्यूटर व अन्य संचार उपकरणों पर हिंदी में काम करना बहुत सहज हो गया है।

आइए, आजादी के 75वें वर्ष में हम सब संकल्प लें कि हम पूरी गंभीरता और निष्ठा के साथ राजभाषा नीति का अनुपालन करेंगे और अपने सहयोगियों को भी इसके अनुपालन के लिए प्रेरित करेंगे। साथ ही अपने दैनिक कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग बढ़ायेंगे।

अंत में पत्रिका संपादन मंडल को सफल प्रकाशन के लिए अग्रिम बधाई और आप सभी के उत्तम स्वास्थ्य की मंगलकामना के साथ एक बार पुन: हिंदी दिवस की शुभकामनाएं!

पी. एम. प्रसाद
अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक,
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड, धनबाद

पी वी के आर मल्लिकार्जुन राव
निदेशक (कार्मिक)
P.V.K.R. Mallikarjuna Rao
Director (P)

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड
एक मिनी रत्न कम्पनी
(कोल इण्डिया की सहायक कंपनी)
BHARAT COKING COAL LIMITED
A Mini Ratna Company
(A Subsidiary of Coal India Limited)
कोयला भवन, कोयला नगर / Koyla Bhawan, Koyla Nagar,
धनबाद /Dhanbad-826005

संरक्षक की कलम से

प्रिय साथियो,

हिंदी दिवस के अवसर पर सितंबर माह में प्रकाशित 'कोयला भारती' पत्रिका के इस नवीनतम अंक के माध्यम से आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं!

भारत देश के आमजन की भाषा हिंदी आज दुनिया की सर्वाधिक लोकप्रिय भाषाओं में से एक है। देश के स्वतंत्रता आंदोलन के समय से ही यह अनुभव किया जाने लगा था कि हिंदी में ही देश की राजभाषा बनने की सारी संभावनाएं मौजूद हैं। इसी वजह से 14 सितंबर, 1949 को संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया और उसके बाद राजकाज में हिंदी को अधिक सशक्त बनाने के लिए समय-समय पर आवश्यकतानुसार राजभाषा नीति में प्रावधान किये गये। भले ही हिंदी भाषा का इतिहास हजार साल पुराना हो किंतु देश का शासकीय कामकाज में अभी भी हिंदी को अपना मुकाम हासिल करने के लिए लंबा रास्ता तय करना है। हिंदी को शिखर तक पहुंचाने के लिए हम सब को मिलकर योगदान करना होगा। हिंदी में काम करना केवल हिंदी दिवस या हिंदी पखवाड़ा तक ही सीमित न रखते हुए हम वर्ष भर हिंदी में संपूर्ण कार्य करें।

जिस तरह नवीन तकनीकों के आगमन से कोयला खनन के हमारे मूल कार्य में हमने अधिक दक्षता हासिल की है, उसी प्रकार वर्तमान तकनीकी युग में तकनीकी की मदद से हम हिंदी भाषा में भी प्रभावी रूप से अपना कार्यालयीन कार्य कर सकते हैं। आज हिंदी तकनीकी रूप से काफी समर्थ भाषा बन चुकी है। हिंदी में टंकण, अनुवाद, ओसीआर, यूनिकोड समर्थित फॉन्ट, बोलकर लिखना, शब्दकोष जैसी तमाम भाषा-प्रौद्योगिकीय युक्तियां उपलब्ध हैं। बस हमें इन उपलब्ध तकनीकी साधनों को कुशलता पूर्वक उपयोग करना है।

जिस तरह से कोयला खनन के माध्यम से देश की ऊर्जा आवश्यकतों की पूर्ति करना हमारा प्राथमिक उद्देश्य है, उसी प्रकार एक सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम होने के नाते देश की राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार और राजभाषा नीति का कार्यान्वयन भी हमारी वैधानिक जिम्मेदारी है। मैं कंपनी के सभी महाप्रबंधकों / विभागाध्यक्षों से अपील करता हूँ कि वे अपने अधीनस्थ कार्यालयों में राजभाषा नीति से संबंधित सभी प्रावधानों का शत-प्रतिशत कार्यान्वयन सुनिश्चित करें।

आईए, हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित राजभाषा पखवाड़ा के अवसर पर हम संकल्प लें कि सितंबर माह में ही नहीं हम वर्ष भर पूरे उत्साह के साथ हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार एवं कार्यान्वयन में सर्वोत्कृष्टता को हासिल करेंगे।

अंत में पत्रिका सम्पादन मण्डल को सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

पी. वी. के. आर. मल्लिकार्जुन राव
निदेशक (कार्मिक)
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

अंक – 35, अर्ध वार्षिक
सितंबर, 2021

कोयला भारती

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड की गृह पत्रिका

अध्यक्ष
पी. एम. प्रसाद
अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक

संरक्षक
पी. वी. के. आर. मल्लिकार्जुन राव
निदेशक (कार्मिक)

परामर्श
संतोष नारायण सिन्हा
महाप्रबंधक (कार्मिक एवं औद्यो. सं.)/राजभाषा

विशेष सहयोग
आशीष कुमार बोस
विभागाध्यक्ष, भुगतान विभाग

अनिल कुमार पाण्डेय
मुख्य प्रबंधक (वित्त)

दीपक कुमार सिन्हा
प्रबंधक/सचिव (राजभाषा)

सुश्री कंचन प्रसाद
सहा. प्रबंधक (वित्त)

अरिजित चक्रवर्ती
सहायक प्रबंधक (जन संपर्क)

वरिष्ठ संपादक
दिलीप कुमार सिंह
प्रबंधक (राजभाषा)

सहयोग
महेन्द्र कुमार सिंह, वरीय निजी सहायक
अनिरुद्ध नोनिया, सहायक अनुवादक
वंदना देवी, सहायक अनुवादक

प्रकाशक
राजभाषा विभाग
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड
कोयला भवन, कोयला नगर, धनबाद- 826005
दूरभाष : 0326-2236463
फैक्स : 0326-2230262

अनुक्रम

संपादकीय :
भारत की आजादी में हिंदी का योगदान 4
भाषा विमर्श:
अदालत में भारतीय भाषाएँ 6
मेरे रश्के-क़मर और उर्दू अर्थबोध 9
कोरोना का भारतीय भाषाओं पर प्रभाव 11
बड़ी कलम:
पूस की रात 15
प्रेरक व्यक्तित्व:
हिंदी प्रहरी - राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन 18
स्वास्थ्य चर्चा:
हेयर ट्रांसप्लांटेशन : (बालों का प्रत्यारोपण) 20
आपका गुल्लक:
रियलएस्टेट इंवेस्टमेंट ट्रस्ट (आर.ई.आई.टी) 25
काव्यकुंज:
मरा नहीं है रावण 27
यादों के भंवर में 28
जीवन का रंगमंच 28
तबादला 29
आध्यात्मिक चिंतन:
ईश्वरलाभ ही मानव जीवन का उद्देश्य है 30
राजभाषा कार्यान्वयन:
हिंदी और हिंदी दिवस 31
राजभाषा पखवाड़ा का आयोजन 32
राजभाषा प्रशिक्षण, बैठकें एवं अन्य कार्यक्रम 33
कंपनी समाचार : 35

संपादक
उदयवीर सिंह
उप प्रबंधक (राजभाषा)

'कोयला भारती' में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं । इनसे प्रकाशक / संपादक / बीसीसीएल प्रबंधन का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं । अतः पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता एवं उनमें व्यक्त विचारों के लिए रचनाकार उत्तरदायी हैं। न्यायिक सीमा, धनबाद। निःशुल्क, आंतरिक वितरण हेतु।

नोटः 'कोयला भारती' पत्रिका में प्रकाशन हेतु आप अपनी रचनाएँ ई-मेल udayvir4@gmail.com पर भी भेज सकते हैं

संपादकीय

भारत की आजादी में हिंदी का योगदान

देश आजादी का 75वां वर्ष मना रहा है। इस अवसर पर सरकार द्वारा 'आजादी का अमृत महोत्सव' नाम से एक विशेष अभियान चलाया जा रहा है। आज हम आजाद देश के नागरिक हैं और स्वतंत्रतापूर्वक अपने अधिकारों का उपयोग कर सकते हैं। अपनी इच्छानुसार कहीं भी आ-जा सकते हैं, घर मकान बना सकते हैं। जैसी चाहें शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं और जो चाहें नौकरी-रोजगार कर सकते हैं। बिना किसी डर के अपने विचार व्यक्त कर सकते हैं। अव्यवस्थाओं के लिए शासन-सरकार को कटघरे में खड़ा कर सकते हैं। किंतु पराधीन भारत में यह सब संभव न था। ब्रिटिश हुकूमत ने हमारे पैरों में पराधीनता की जो बेड़ियां डाल रखीं थीं भारत के लोग उन्हें तोड़ने के लिए एकजुट हुए और देश के समेकित प्रयासों से हमने 15 अगस्त 1947 को आजादी की स्वर्णिम सुबह देखी।

यह आजादी हमें आसानी से नहीं मिली है। इसके लिए हमारे देश के अनगिनत वीर सुपूतों का रक्त बहा है। बलिदानों की एक लंबी श्रृंखला रही है। भारत के वीर और प्रबुद्ध नायकों के अतुलनीय प्रयासों ने आजादी के सपने को साकार किया है। एक तरफ जहां वीर क्रांतिकारी अपनी जान हथेली पर रखकर देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की बाजी लगाने को तैयार थे तो वहीं दूसरी ओर प्रबुद्ध लेखक, साहित्यकार और पत्रकार अपनी तीव्र व ओजस्वी लेखनी से देश की आमजनता के साथ-साथ भारतीय नेतृत्व को भी प्रेरित और उद्बोधित कर रहे थे।

स्वतंत्रता आंदोलन के समय वैचारिक आदान-प्रदान और जनता के बीच संदेश पहुंचाने के लिए जब पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन शुरू किया गया, पर्चे छापे जाने लगे और जन सभाओं का आयोजन किया जाने लगा, तो सबके बीच एक सूत्र के रूप में हिंदी भाषा ही थी। देश के सभी भाषा-भाषी पत्रकार, समाजसेवक, राजनेता, वकील, शिक्षक, जब एक मंच पर इकट्ठा होते थे तब उनके संवाद की भाषा हिंदी ही होती थी। स्वतंत्रता आंदोलन के समय अनेक हिंदी पत्र और पत्रिकाओं का प्रकाशन देश के गैर हिंदी भाषी क्षेत्रों से होता था।

हमारे सभी स्वतंत्रता सेनानी और नेता पूर्व से पश्चिम तथा उत्तर से दक्षिण तक घूम-घूम कर देश को एकता के सूत्र में बांधने का प्रयास कर रहे थे। किंतु भारत जैसे विविधताओं वाले देश में लोगों को एकजुट करके किसी एक उद्देश्य के लिए प्रेरित करना आसान काम न था। भारत में न केवल भौगोलिक विविधता है बल्कि सांस्कृतिक और भाषायी विविधता भी व्यापक स्तर पर विद्यमान है। ऐसे में कोई एक केंद्रीय भाषा आवश्यक थी जो लाखों लोगों के बीच आपसी संवाद का माध्यम बनकर देश की एक आवाज बन सके। इस उद्देश्य के लिए हिंदी ही सबसे उपयुक्त और प्रभावी भाषा थी जो तत्कालीन परिस्थितियों में देश के बीच एक पुल का कार्य कर सकती थी।

महात्मा गांधी और सुभाषचंद्र बोस जैसे राष्ट्रीय नेता हिंदी की सामर्थ्य को पहचानते थे और अपने सभा-सम्मेलनों में अधिक से अधिक हिंदी भाषा का ही प्रयोग किया करते थे । गांधी जी की तो यही कोशिश रहती थी कि राष्ट्रीय आंदोलनों की प्रमुख भाषा हिंदी होनी चाहिए। कुछ हद तक कहा जा सकता है कि सत्याग्रह, असहयोग, सविनय अवज्ञा और भारत छोडो जैसे आंदोलन जनता के बीच तादात्म्य स्थापित करने में पूर्ण रूप से इसलिए सफल रहे कि उनके संवाद की मूल भाषा हिंदी ही थी। गाँधी जी ने कहा था, "मेरे विचार में स्वराज्य प्राप्ति की गति में तीव्रता लाने के लिए स्वदेशी, हिंदू -मुस्लिम एकता तथा राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी का प्रचार आवश्यक है।" गांधीजी ने हिंदी के प्रसार के लिए अपने संपादन में ही अगस्त, 1921 से गुजराती समाचार पत्र नवजीवन का प्रकाशन हिंदी में करना प्रारम्भ किया। वे गुजरात के लोगों को हिंदी संस्करण ज्यादा से ज्यादा पढ़ने के लिए हमेशा प्रेरित करते थे ।

नेताजी सुभाषचंद्र बोस बर्मा में अंग्रेजों के विरुद्ध आजाद हिंद फौज की स्थापना के समय एक हिंदी भाषी व्यवसायी से हिंदी

सीखनी शुरू की थी। वे कहते थे कि जल्दी ही भारत आजाद हो जाएगा। भारत के स्वतंत्र होने के बाद हम भारतीय जनता को अंग्रेजी भाषा से भी मुक्ति दिलाएंगे। ऐसे में हिंदी ही एकमात्र ऐसी भाषा होगी, जिसे ज्यादातर भारतीय समझेंगे और बोलेंगे। इसलिए हिंदी का अच्छा ज्ञान होना जरूरी है।

आचार्य बिनोवा भावे ने कहा था कि यदि मैंने हिंदी का सहारा न लिया होता तो कश्मीर से कन्याकुमारी और असम से केरल तक के गांव-गांव में जाकर मैं भूदान, ग्राम-दान का संदेश जनता तक न पहुंचा पाता। यदि हम स्वाधीनता आंदोलन के जननायकों के भाषणों पर नजर डालें तो पायेंगे कि भले ही उनकी मातृभाषा हिंदी नहीं रही हो परन्तु वे आम जनता तक हिंदी के माध्यम से ही अपनी बात सरलता से पहुँचाते थे । कुछ उल्लेखनीय नाम हैं - बाल गंगाधर तिलक जिन्होने अपनी पत्रिका 'केसरी' और 'मराठा' में हिंदी लेख लिखे। चक्रवर्ती राजगोपालाचारी ने दक्षिण भारतीय लोगों से अपील की थी कि उन्हें हिंदी अवश्य पढ़नी चाहिए। मुंबई में भारतीय विद्या भवन के संस्थापक और कुलपति कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी का हिंदी प्रेम जगजाहिर हैं। बंगाल के राजा राम मोहन राय, केशवचंद्र सेन ने अपने समय में देश की धड़कन हिंदी को मानते हुए इसके उत्थान में योगदान किया था।

इसके अतिरिक्त, धार्मिक आंदोलनों, शिक्षा के प्रचार-प्रसार, सामाजिक कार्यों, व्यापारिक गतिविधियों और राजनीतिक क्षेत्र में शामिल अनेक गुजराती, मराठी, बंगाली, ओड़िया, तमिल, मलयाली भाषी लोगों ने हिंदी की अतुलनीय सेवा की है।

हाल ही में संसदीय राजभाषा समिति की 36वीं बैठक में बोलते हुए केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह जी ने कहा था कि आजादी की लड़ाई में हिंदी का बहुत बड़ा योगदान रहा है। यह बात सही भी है क्योंकि आजादी के समय हिंदी भाषा ही देश में संवाद की प्रमुख भाषा बन कर उभरी थी और प्रभावी संवाद से ही राष्ट्रीय एकता का मार्ग प्रशस्त हुआ था। भले ही आजाद भारत में कुछ प्रतिकूल परिस्थितियों की वज़ह से हिंदी घोषित रूप से देश की राष्ट्रभाषा न बन सकी हो किंतु अघोषित या कहें कि अनौपचारिक रूप से हिंदी आज इस देश की राष्ट्रभाषा बन चुकी है।

निःसंदेह हिंदी देश की सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है, लेकिन केवल इतने से संतुष्ट नहीं हुआ जा सकता। जब तक हिंदी ज्ञान अर्जन की, विज्ञान एवं तकनीक की और सरकारी एवं गैर सरकारी कामकाज तथा रोजगार की सक्षम भाषा नहीं बनेगी तब तक हिंदी जनआकांक्षाओं की पूर्ति नहीं कर सकती। हिंदी को इस मुकाम तक पहुचाने में हिंदी भाषियों के साथ-साथ हिंदीतर भाषियों का सहयोग और समर्थन अपरिहार्य होगा। जिस तरह आजादी के आंदोलन में समस्त भाषाभाषियों ने हिंदी को अपनाया था उसी तरह आज भी हिंदी के प्रति अन्य भाषा-भाषियों की सभी आशंकाओं को दूर करते हुए हिंदी को अन्य भारतीय भाषाओं के साथ ही समृद्ध करना होगा। वास्तव में भारतीय भाषाओं के बीच पारस्परिक साझेदारी और आपसी संवेदना की ऐसी समझ का विकास होने पर ही अखिल भारतीय बोध का विस्तार होगा और तभी सही अर्थों में अखिल भारतीय स्तर पर हिंदी कायम हो सकेगी। आज अगर हिंदी राजभाषा के दर्जे तक सीमित है तो शायद इसीलिए कि सभी भारतीय भाषाओं के लोग इस पर सहमत नहीं हो पा रहे हैं कि वह राष्ट्रभाषा बने।

अंत में यह कहते हुए 'कोयला भारती' का यह 35वां अंक आपके हाथों में सौंप रहा हूँ कि सैकड़ों वर्षों से हिंदी विविधता भरे इस विशाल भारत को एकता के सूत्र में पिरोते आयी है और आगे भी देश के हृदय को स्पंदित करते हुए भारत की धड़कन बनी रहेगी। हमेशा की तरह पत्रिका के बारे में आप सभी की प्रतिक्रियाओं और सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी।

◆◆◆

(उदयवीर सिंह)
संपादक, कोयला भारती

भाषा विमर्श

अदालत में भारतीय भाषाएँ

- राजेंद्र राम

हिन्दी को अदालत की भाषा बनाए जाने का प्रस्ताव 1958 में ही विधि आयोग अपनी चौदहवीं रिपोर्ट में पेश कर चुका है। मगर इस अनुशंसा के इतने वर्षों बाद भी हिन्दी सर्वोच्च न्यायालय/ उच्च न्यायालयों की भाषा नहीं बन सकी है। यदि केंद्र की भाषा हिन्दी है जैसा कि हमारा संविधान कहता है, उसके आलोक में यह ज़रूरी हो जाता है कि उच्च न्यायालयों एवं सर्वोच्च न्यायालय की कार्यवाही का माध्यम भी हिन्दी हो।

1950 में राजस्थान के उच्च न्यायालय में हिन्दी का प्रयोग अधिकृत हुआ। 1970 में उत्तरप्रदेश, 1971 में मध्यप्रदेश और 1972 में बिहार के उच्च न्यायालयों में भी हिन्दी का प्रयोग अधिकृत हुआ। इन चार उच्च न्यायालयों में अंग्रेज़ी और हिन्दी दोनों भाषाओं का प्रयोग अधिकृत है। उक्त चार उच्च न्यायालयों को छोड़कर देश के शेष 21 उच्च न्यायालयों और सुप्रीम कोर्ट में सभी कार्यवाहियों में अंग्रेज़ी अनिवार्य है।

विश्व के इस सबसे बड़े प्रजातन्त्र में आज़ादी के 74 वर्षों के बाद भी सुप्रीम कोर्ट और देश के 25 में से 21 उच्च न्यायालयों की किसी भी कार्यवाही में भारत की किसी भी भाषा का प्रयोग पूर्णत: प्रतिबंधित है। अगर पूर्वोक्त चार उच्च न्यायालयों में अंग्रेज़ी की अनिवार्यता समाप्त करने में भारत की भाषाई विविधता कोई समस्या नहीं है तो शेष 21 उच्च न्यायालयों में अंग्रेज़ी की अनिवार्यता हटाने में भारत की भाषाई विविधता कोई समस्या कैसे हो सकती है? गौरतलब है कि संविधान के अनुच्छेद 348 के खंड-2 के तहत किसी उच्च न्यायालय में हिन्दी एवं संबंधित क्षेत्रीय भाषा को बराबरी का दर्जा दिया गया है। इसके तहत तमिलनाडु के उच्च न्यायालय में अंग्रेज़ी के अलावा कम से कम तमिल,कर्नाटक उच्च न्यायालय में अंग्रेज़ी के अलावा कम से कम कन्नड, पश्चिम बंगाल के उच्च न्यायालय में बांग्ला, छत्तीसगढ़, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली, उत्तराखंड और झारखंड के उच्च न्यायालयों में अंग्रेज़ी के अलावा कम से कम हिन्दी और इसी तरह अन्य प्रांतों के उच्च न्यायालयों में अंग्रेज़ी के अलावा कम से कम उस प्रांत की राजभाषा को प्राधिकृत किया जाना चाहिए और सर्वोच्च न्यायालय में अंग्रेज़ी के अलावा कम से कम हिन्दी को प्राधिकृत किया जाना चाहिए।

केवल हिन्दी भाषी राज्यों (बिहार, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश और राजस्थान) के उच्च न्यायालयों में भारतीय भाषा के प्रयोग की अनुमति होना, हिंदीतर भाषी प्रान्तों के साथ भेदभावपूर्ण व्यवहार प्रतीत होता है। हिंदी भाषी राज्यों में भी छत्तीसगढ़,

हिमाचल प्रदेश, दिल्ली, उत्तराखंड एवं झारखंड के उच्च न्यायालयों में हिन्दी के प्रयोग की अनुमति नहीं है। ध्यातव्य है कि छत्तीसगढ़, उत्तराखंड एवं झारखंड के निवासियों को इन राज्यों के बनने से पहले अपने-अपने उच्च न्यायालयों में हिन्दी का प्रयोग करने की अनुमति थी।

देश के जिला न्यायालयों में सम्बद्ध राज्य की राजभाषा का प्रयोग अधिकृत है। जब किसी मुकदमे में जिला न्यायालय के बाद हाईकोर्ट में अपील की जाती है, तो जिन 21 उच्च न्यायालयों में अंग्रेज़ी की अनिवार्यता है, उनमें अपील दायर करने के लिए मुकदमे से संबंधित सारे दस्तावेज़ों का प्रामाणिक अनुवाद अंग्रेज़ी में कराने में समय और धन की बर्बादी होती है। ऐसे ही जिन 4 उच्च न्यायालयों में हिन्दी का प्रयोग अधिकृत है, उनसे सम्बद्ध फैसलों पर जब उच्चतम न्यायालय में अपील दायर की जाती है, तब भी मुकदमों से संबंधित सारे दस्तावेज़ों का प्रामाणिक अनुवाद अंग्रेज़ी में कराने में समय और धन की बर्बादी होती है।

जिला न्यायालय में जो वकील किसी मुकदमे में काम करता है, आम तौर पर उसे मुकदमे के बारे में सारे तथ्य ज्ञात होते हैं। परंतु अंग्रेज़ी अनिवार्यता के कारण उच्च न्यायालय और उच्चतम न्यायालय में अंग्रेज़ी में पारंगत नया वकील रखना पड़ता है तो नए सिरे से वकील को मोटी फीस देनी पड़ती है।

भारत को जीतकर इसे गुलाम बनाने वाले विदेशी मुस्लिम शासकों ने बिना किसी हिचक के हजारों वर्षों से भारत में प्रयुक्त हो रही राजभाषाओं को हटाकर फारसी भाषा को यहाँ की राजभाषा बना दिया। जबकि पूर्व में भारत की जनता का फारसी भाषा से कोई खास ताल्लुक नहीं था।जब ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत को गुलाम बनाया तो लगभग छह सौ वर्षों तक राजभाषा के रूप में प्रयोग में लाई जा रही भाषा फारसी को हटाकर अंग्रेज़ी को भारत की राजभाषा बना दिया। जबकि इससे पूर्व भारत की जनता का अंग्रेज़ी भाषा से कोई खास ताल्लुक नहीं था। परिणाम स्वरूप सरकारी नौकरी पाने की चाहत वालों ने अंग्रेज़ी सीखी और कुछ ही वर्षों में अंग्रेज़ी भाषा भारत में न्यायालयों, शिक्षा और प्रशासन की भाषा भी बन गई और अंग्रेज़ी जानना श्रेष्ठता का सूचक बन गया। लेकिन हम देश की आज़ादी मिलने के 74 वर्षों के बाद भी भारत में अंग्रेजों द्वारा प्रयुक्त राजभाषा अंग्रेज़ी को हटाकर भारत की जनभाषाओं को न्यायालय की भाषा का दर्जा नहीं दे सके। जबकि भारत के जनगणना आयोग के आंकड़ों के अनुसार भी भारत में अंग्रेज़ी जानने वालों की संख्या 1% से भी कम है।

नेपाल के उच्चतम न्यायालय सहित सारे न्यायालयों की सारी कार्यवाहियाँ नेपाली भाषा में होती है। पाकिस्तान के उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों सहित सारे न्यायालयों की सभी कार्यवाहियों में उर्दू भाषा का प्रयोग करने की सुविधा है। हांलाकि अंग्रेज़ी भाषा का प्रयोग भी यहाँ निषिद्ध नहीं है। परंतु उर्दू का दर्जा किसी भी रूप में अंग्रेज़ी से नीचे नहीं है। अर्थात कोई व्यक्ति पाकिस्तान के उच्चतम न्यायालय सहित किसी भी न्यायालय में अगर उर्दू भाषा में मुकदमा दायर करता है तो मुकदमों से संबन्धित बहस उर्दू भाषा में होगी और न्यायाधीश अपना निर्णय भी उर्दू में ही लिखेंगे।

अगर हमारे देश के उच्चतम न्यायालय में अंग्रेज़ी के साथ-साथ हिन्दी भाषा का विकल्प प्रारम्भ होगा, तब भी न्याय व्यवस्था जनआकांक्षामुखी और ज़्यादा कारगर हो सकती है। अगर भारत के संसद की कार्यवाही 22 भारतीय भाषाओं में संभव है, अगर संयुक्त राष्ट्र संघ में (अंग्रेज़ी, फ्रेंच, स्पेनिश, चाइनीज, रूसी और अरबी) छह आधिकारिक भाषाओं में कामकाज हो सकता है। पचास करोड़ की आबादी वाले यूरोपियन यूनियन में 24 भाषाओं में काम होता है तो न्याय की

भाषा के रूप में हिन्दी सहित अन्य भारतीय भाषाओं को अंग्रेज़ी के साथ विकल्प देने का प्रयोग संभव क्यों नहीं हो सकता?

आज फ्रांस, जर्मनी, स्विट्ज़रलैंड, स्वीडन, डेनमार्क, इस्राइल, स्पेन, रूस, चीन, जापान, ताइवान, कोरिया सहित विश्व में ऐसा कोई भी देश नहीं है जिसने देश के अंदर न्यायालय, शिक्षा, प्रशासन आदि में किसी विदेशी भाषा का इस्तेमाल करके प्रगति हासिल की हो। देश के अंदरूनी कार्यों में अंग्रेज़ी का इस्तेमाल करने वाले चंद देश इंग्लैंड, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और आंशिक तौर पर कनाडा भी ऐसे देश हैं, जिनकी जनभाषा अंग्रेज़ी है। क्या विज्ञान की पढ़ाई केवल अंग्रेज़ी में ही हो सकती है? क्या इंग्लैंड, यू॰एस॰ए. ऑस्ट्रेलिया और कनाडा के बाहर लोग विज्ञान की पढ़ाई नहीं करते? क्या इन चार मुल्कों को छोड़कर बाकी दुनिया असभ्य है?

पुराने जमाने में इंग्लैंड देश में भी बाइबल केवल लैटिन भाषा में ही था, अंग्रेज़ी में नहीं था। उन दिनों इंग्लैंड में रोमन कैथोलिक चर्च का बोलबाला था। रोमन कैथोलिक चर्च इस बात का समर्थक था कि बाइबल सहित धर्म संबंधी सारे आलेख केवल लैटिन भाषा में उपलब्ध होने चाहिए। जिसकी समझ और व्याख्या व्यख्या करने का अधिकार केवल पादरियों के पास होना चाहिए। इंग्लैंड में बाइबल सहित अन्य धार्मिक आलेखों का लैटिन से अंग्रेज़ी में अनुवाद के समर्थक लोग समाज पर रोमन कैथोलिक चर्च के प्रभुत्व के खिलाफ थे और वे लैटिन के प्रभुत्व के स्थान पर जनभाषा अंग्रेज़ी और जन अधिकारों के समर्थक थे। बाइबल सहित अन्य धार्मिक आलेखों का लैटिन से अंग्रेज़ी में अनुवाद के पीछे मुख्य रूप से यह तर्क था कि किसी भी मनुष्य के लिए भगवान(सत्ता) से जुड़ने के लिए पादरियों की मध्यस्थता की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए; उन्हें भगवान से क्षमा और मुक्ति के लिए स्वयं प्रार्थना करने का हक होना चाहिए। बाद में जनाधिकारों और जन-स्वतंत्रता के समर्थक लोगों के दबाव में बाइबल अंग्रेज़ी में अनुवाद के रूप मे उपलब्ध हुआ।

आज अंग्रेज़ी भाषा भारतीय उच्चतम न्यायालय व अधिकांश उच्च न्यायालयों में लैटिन भाषा की भूमिका में है। न्याय के मंदिर में भाषा के अंग्रेज़ी होने से करोड़ों गरीब, निरक्षर भारतीय भाषियों के लिए अदालतीय कार्यवाही एक अबूझ पहेली की तरह हो जाती है।

कार्यालय अधीक्षक
बोर्ड सचिवालय, बीसीसीएल मुख्यालय

भाषा विमर्श

मेरे रश्के-क़मर और उर्दू अर्थबोध

- सीताराम गुप्ता

कुछ समय पहले 'रेड' फिल्म का एक गाना मेरे रश्के-कमर बहुत प्रसिद्ध हुआ। वास्तव में ये एक ग़ज़ल है जो रिवायती रंग लिए हुए है और इसके शायर हैं 'फ़ना' बुलंदशहरी। पूरा नाम हनीफ़ मोहम्मद 'फ़ना' बुलंदशहरी। इस ग़ज़ल को सबसे पहले उस्ताद नुसरत फ़तेह अली ख़ाँ साहब ने अपनी दमदार आवाज़ में दो दशक पहले गाया था। फिल्म में लिए जाने से आज वही ग़ज़ल फिर से हर आमो-ख़ास के सर चढ़ कर बोल रही है लेकिन हिंदी जानने वाले अधिकांश लोग जो उर्दू नहीं जानते या जानना-समझना नहीं चाहते अथवा उर्दू के सही उच्चारण को महत्त्व नहीं देते इस ग़ज़ल के कई शब्दों के ग़लत अर्थ लगा रहे हैं जो कई बार बड़ा हास्यास्पद लगता है। ग़ज़ल का पहला शेर है :

मेरे रश्के-क़मर तूने पहली नज़र
जब नज़र से मिलाई मज़ा आ गया,
बर्क़ सी गिर गई काम ही कर गई,
आग ऐसी लगाई मज़ा आ गया।

ग़ज़ल के पहले शेर के शुरुआती अल्फ़ाज़ हैं मेरे रश्के-क़मर। कई लोगों से बात करने पर पता चला कि वो क़मर का अर्थ शरीर के एक अंग लंक, कटि अथवा कमर से लगाते हैं जो एकदम ग़लत है। कहते हैं तेरी कमर ईर्ष्या पैदा कर रही है। नायिका की लचीली कमर देखने के बाद ऐसा अनुमान लगाना अस्वाभाविक भी नहीं। दरअसल वे रश्के-क़मर को रश्के-कमर बोलते और रश्के-कमर ही लिखते हैं। अंतर बहुत सूक्ष्म है लेकिन महत्त्वपूर्ण है। आइए पहले रश्के-क़मर का सही अर्थ जानने की कोशिश करते हैं और उसके बाद ग़लत अर्थ लगाने का कारण भी पता लगाते हैं। प्रस्तुत ग़ज़ल में प्रयुक्त क़मर शब्द हिन्दी में अधिक प्रयुक्त कमर से अलग है।

कमर दो तरह से लिखा जाता है। एक कमर में क पर नीचे नुक़्ता लगाया जाता है तथा दूसरे पर नहीं। एक को नुक़्ता लगाकर क़मर लिखा जाता है तो दूसरे को बिना नुक़्ता लगाए कमर लिखा जाता है। ये ज़रूरी नहीं कि उर्दू के हर लफ़्ज़ पर हर जगह नुक़्ता लगाया ही जाए लेकिन कई जगह नुक़्ता लगाना बेहद ज़रूरी हो जाता है क्योंकि नुक़्ता लगाने से कई शब्दों का उच्चारण ही नहीं अर्थ भी बदल जाता है। वास्तव में उच्चारण ही सही अर्थ निश्चित करता है। ग़ज़ल में प्रयुक्त क़मर शब्द में क पर नुक्ता लगा हुआ है जिससे इसका उच्चारण और अर्थ दोनों बदल जाते हैं। वैसे तो कमर और क़मर दोनों ही उर्दू के हैं। बिना नुक़्ते के लिखा जाने वाला कमर फ़ारसी भाषा का है जिसका अर्थ है लंक या कटि जो शरीर का एक अंग है। नुक़्ता लगाकर लिखा जाने वाला क़मर अरबी भाषा का है जिसका अर्थ है चाँद, चंद्रमा अथवा निशीथ।

प्रस्तुत ग़ज़ल में महबूबा को रश्के-क़मर कहा गया है। उसके अंग-प्रत्यंग विशेष रूप से मुख इतना सुंदर है जिससे चाँद भी उससे रश्क या ईर्ष्या करे अर्थातमहबूबा का सौंदर्य चाँद को भी लज्जित करने वाला है। रश्के-क़मर को और अधिक स्पष्ट करने के लिए कुछ अन्य शब्द और उनके अर्थ देखते हैं जैसे रश्के-माह, रश्के-मेह्र, रश्के-मेह्रो-माह, रश्के-हूर आदि। माह का अर्थ भी चाँद है अतः रश्के-माह का अर्थ हुआ चाँद के सौंदर्य अथवा उसकी प्रभा को मंद कर देने वाले मुख वाली नायिका। मेह्र का अर्थ सूर्य है अतः रश्के-मेह्र का अर्थ हुआ सूर्य के सौंदर्य अथवा उसकी चमक-दमक को फीका कर देने वाले मुख वाली नायिका। इस प्रकार से रश्के-मेह्रो-माह का अर्थ हुआ सूर्य व चंद्रमा दोनों के तेज व सौंदर्य को अल्प कर देने वाले मुख वाली नायिका। और रश्के-परी का अर्थ है ऐसी सुंदर नायिका जिसके सौंदर्य के आगे परियाँ अथवा स्वर्गांगनाएँ भी ईर्ष्या से भर उठें, उन्हें अपना सौंदर्य निरर्थक लगने लगे अथवा वे हीन भावना से ग्रस्त हो जाएँ।

रश्के-क़मर को और अधिक स्पष्ट करने के लिए अल्लामा 'इक़बाल' के प्रसिद्ध क़ौमी तराना "सारे जहाँ से अच्छा....." की ये पंक्तियाँ देखिए:

गोदी में खेलती हैं इसकी हज़ारों नदियाँ,
गुलशन है जिनके दम से रश्के-जिनाँ हमारा।

यहाँ रश्के-जिनाँ में जो जिनाँ शब्द आया है वो जन्नत से बना है। जन्नत एक अरबी शब्द है जिसका अर्थ है स्वर्ग। अरबी में जन्नत का बहुवचन होता है जिनान जिसे शायरी की ज़रूरत के हिसाब से यहाँ जिनाँ कर दिया गया है जैसे हिन्दोस्तान का हिन्दोस्ताँ, जहान का जहाँ या गुलिस्तान का गुलिस्ताँ। उपरोक्त पंक्तियों का अर्थ हुआ कि भारत देश के आँचल में हज़ारों नदियाँ बहती हैं जिनके कारण या जिनके प्रभाव से भारत देश रूपी उद्यान स्वर्गों से भी बढ़कर है। पूरी दुनिया में हर धर्म में स्वर्ग की कल्पना एक बहुत ही सुंदर उद्यान के रूप में की जाती है। भारत-भूमि इतनी सुंदर व आकर्षक है कि ब्रह्माण्ड के समस्त स्वर्ग उससे ईर्ष्या करते हैं, उसकी सुंदरता व आकर्षण का लोहा मानते हैं। रश्के-जिनाँ अर्थात ब्रह्माण्ड के तमाम स्वर्गों से भी सुंदर स्थान।

पुनः मेरे रश्के-क़मर पर चर्चा करते हैं। हिन्दी साहित्य में भी चाँद के अप्रतिम सौंदर्य के कारण सुंदरता की तुलना चाँद से की जाती है अथवा चाँद से उपमा या तश्बीह दी जाती है जैसे चेहरा चाँद जैसा सुंदर है लेकिन यहाँ पर चेहरा चाँद जैसा सुंदर होने पर भी चाँद की तरह अप्रतिम नहीं है। जब हम तुलना से आगे बढ़ जाते हैं तो उपमेय को उपमान पर ही आरोपित कर देते हैं जैसे चंद्रमुख या चंद्रवदन आदि। यहाँ उपमेय व उपमान की एकरूपता उपमेय के गुणों को उपमा की तुलना में बढ़ा देते हैं लेकिन यहाँ बराबरी की ही बात हो रही है उसको पीछे छोड़ने की नहीं। रश्के-क़मर में चाँद का सौंदर्य पिछड़ गया है। यहाँ चाँद को ही नायिका के अप्रतिम सौंदर्य से ईर्ष्या हो रही है।

मेरे रश्के-क़मर में एक ख़ास बात और है और वो है महबूबा को मेरी रश्के-क़मर कहने की बजाय मेरे रश्के-क़मर कहा गया है। उर्दू शायरी में महबूबा के लिए प्रायः पुल्लिंग संबोधन इस्तेमाल किया जाता है। उसे महबूबा की बजाय महबूब कहा जाता है। इसी ग़ज़ल का अगला या दूसरा शेर जो हुस्ने-मत्ला भी है इस तरह से है :

जाम में घोल कर हुस्न की मस्तियाँ
चाँदनी मुस्कराई मज़ा आ गया,
चाँद के साए में ऐ मेरे साक़िया
तूने ऐसी पिलाई मज़ा आ गया।

यहाँ साक़ी को भी ऐ मेरे साक़िया कह कर संबोधित किया गया है जो कि पुल्लिंग संबोधन है। साक़ीबाला हो या महबूबा दोनों का सौंदर्य ही अप्रतिम माना गया है और उर्दू शायरी में दोनों के लिए ही पुल्लिंग संबोधन का इस्तेमाल किया जाता है जो उर्दू शायरी को एक विशिष्टता प्रदान करता है।

अब हम उर्दू अल्फ़ाज़ के गलत अर्थ लगाने के कारणों पर भी थोड़ा सा विचार कर लेते हैं। कारण स्पष्ट है और वो है हिन्दी में प्रयुक्त उर्दू शब्दों (अरबी-फारसी शब्दों) के सही उच्चारण का ज्ञान न होना। यदि हम अलग उच्चारण वाली ध्वनियों पर नुक़्ता लगाकर लिखें तो इस समस्या से मुक्ति संभव है। हिन्दी की ध्वनियों क, ख, ग, ज, फ में नुक़्ते लगाकर क़, ख़, ग़, ज़, फ़ बना लिया गया है जो उर्दू के अनुकूल हैं। कुछ विद्वान हिन्दी में प्रयुक्त उर्दू शब्दों (अरबी-फारसी शब्दों) को लिखते समय जहाँ अपेक्षित हो देवनागरी लिपि के वर्णों क, ख, ग, ज और फ के नीचे नुक़्ता लगाकर क़, ख़, ग़, ज़ और फ़ लिखने की सिफारिश करते हैं तो कुछ इसका पुरज़ोर विरोध करते हैं।

यदि हिन्दी वाले इसे मन से स्वीकार कर पाठ्यक्रम में ही सम्मिलित कर लें तो रोज़ रोज़ का झगड़ा ही मिट जाए और हम उर्दू लफ़्ज़ों के सही-सही अर्थ समझने में जो ग़लतियाँ करते हैं उनसे बच जाएँ। नुक़्तों के प्रयोग से हिन्दी भाषा थोड़ी कठिन अवश्य हो जाएगी लेकिन साथ ही अन्य भाषाओं के अधिक निकट और लेखन व उच्चारण की दृष्टि से अधिक वैज्ञानिक भी अवश्य हो जाएगी। यह तभी संभव है जब हम भाषाई पूर्वाग्रहों से पूर्णतः मुक्त होकर सभी भाषाओं की विशेषताओं को समझें और स्वीकार करें।

ए डी-106-सी, पीतमपुरा,
दिल्ली-110034

भाषा विमर्श

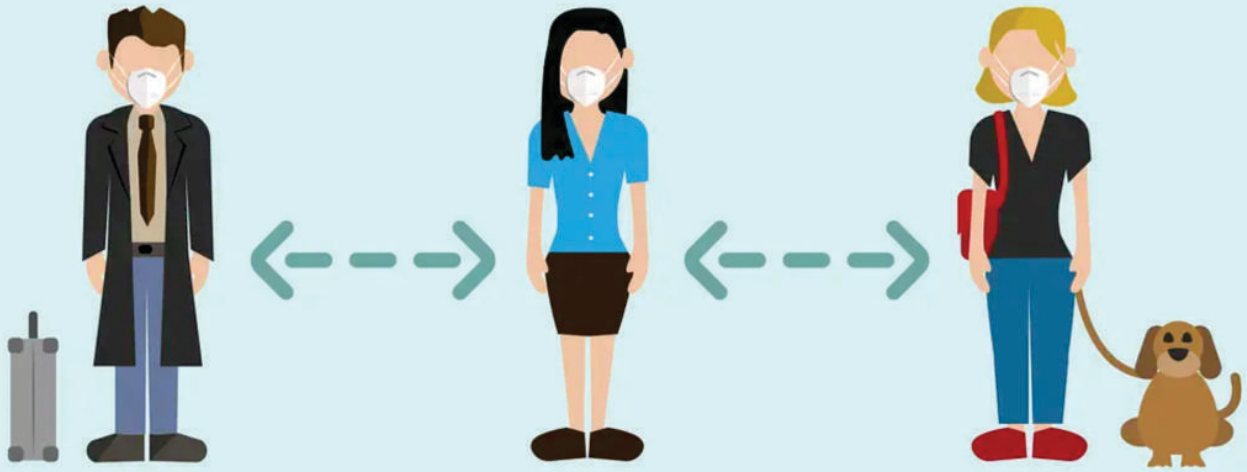

कोरोना का भारतीय भाषाओं पर प्रभाव

- रवि रंजन कुमार

भारत विश्व विख्यात एक ऐसा बहुसंख्यक देश है, जहाँ विभिन्न प्रकार के धर्म, जाति, प्रांत केलोग एकजुट रह कर अपना जीविकोपार्जन कर रहें है। अतः यह एक विभिन्नताओं में एकता वाला देश है। विभिन्नताओं वाला स्वरूप न केवल सामाजिक और भोगौलिक है, बल्कि भाषायी और सांस्कृतिक भी है।

भाषा-सर्वव्यापक है, वैचारिक आदान-प्रदान का माध्यम है, भाषा से शिक्षा मिलती और फिर ज्ञान बढ़ता है, तत्पश्चात ज्ञान से सम्पूर्ण कार्य होते है। अतः भाषा सर्वत्र अनुस्यूत है।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 344 व संविधान की आठवीं अनुसूची में वर्तमान में 22 भारतीय भाषाओं को शामिल किया गया है, जो इस प्रकार हैं- १. असमिया २. बांग्ला ३. गुजराती ४. हिंदी ५. कन्नड़ ६. कश्मीरी ७. मराठी ८. मलयालम ९.उड़िया १०. पंजाबी ११. संस्कृत १२. तमिल १३. तेलुगू १४. उर्दू १५. सिंधी १६. कोंकणी १७. मणिपुरी १८.नेपाली १९. बोडो २०. डोगरी २१. मैथिली और २२. संथाली। इस समय भारत में इन 22 भाषाओं को बोलने वाले लोगों की संख्या लगभग 90 प्रतिशत है और इन्हें राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। इसके अतिरिक्त अंग्रेजी भी सहायक राजभाषा है, जो मिजोरम, नागालैंड व मेघालय की राजभाषा भी है। वर्तमान में भारत में 58 भाषाओं में विद्यालयों में पढ़ाई की जाती है, परंतु आठवीं अनुसूची में उन भाषाओं का उल्लेख है जिन्हे राजभाषा की संज्ञा दी गई है। भारतीय भाषाओं में सर्वाधिक बोलचाल की भाषा के रूप में हिन्दी ही प्रतिष्ठित है।

भारत की विविधता भाषाओं से भी है। देश में एक राज्य से दूसरे राज्य में जाने पर ही प्रत्यक्ष परिलक्षित होता है कि उनके बगैर राष्ट्र का कोई आधार नहीं है। एक विकासशील देश होने के नाते सर्वांगीण विकास की आधारशिला भाषा ही है। अनेक अनुकूल या प्रतिकूल स्थितियों-परिस्थितियों में निरंतर हमारे देश की भाषाओं का प्रचलन व्यापक हो रहा है और इनमें परिस्थिति के अनुसार संप्रेषण को सक्षम बनाने के लिए नये शब्दों का समावेश होता ही आया है। भारतीय भाषाओं में इसकी एक अनोखी परंपरा

रही है।

कोरोना:- एक ऐसी वैश्विक महामारी है जो एक वायरस के समूह में वर्ष 2019-2020 में चीन के बुहान शहर से तेजी से पूरे विश्व में अपना पैर पसार चुकी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसे कोविड-19 नाम दिया है। इस कोरोना काल में शायद ही कोई ऐसा देश हो जो इससे अछूता रहा हो। इसका प्रभाव अत्यंत विनाशकारी था और है भी, क्योंकि इसके प्रकोप से पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था चरमरा सी गई है। हमारा देश भारत भी इससे अछूता नहीं रहा। वर्तमान में कोरोना का प्रभाव इतना प्रबल है कि वह हमें शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, नैतिक एवं शैक्षणिक, प्रत्येक क्षेत्र में कहीं न कहीं प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रुप से कमजोर कर चुका है। न जाने कितने लाख लोग इसके कारण काल के मुँह में समा गये हैं।

भारतीय भाषाओं पर कोरोना का प्रभाव

इस कोरोना काल में हमारी भारतीय भाषाओं पर भी इसका कहर प्रभावशील रहा है। परंतु यदि भाषाओं को लेकर देखें तो इस काल में नकारात्मक पहलू के साथ साथ कुछ सकारात्मक चीजें भी हैं, वह भारतीय भाषाओं में मौखिक एवं लिखित शैली में नये शब्दों का विस्तार, जी हाँ, इस कोरोना अवधि में नये-नये शब्दों का प्रचलन भारतीय भाषाओं में समेकित होकर बोल-चाल के रूप में सामने आया है। हर राज्य के लोगों द्वारा इन शब्दों को उपयोग में लाया जा रहा है। यह भाषाओं पर कोरोना का सकारात्मक पहलू है। इसे हम प्रोत्साहन समझकर खुद को सांत्वना दे सकते हैं।

नये-नये शब्दों का भण्डार का मतलब क्या है? कोरोना काल में जिन नये शब्दों का प्रयोग बोल-चाल की भाषाओं में ज्यादा प्रचलित हुआ, वे निम्न प्रकार है :-

लॉकडाउन:- कोलिंस शब्दकोष ने इसे 2020 में वर्ष का शब्द घोषित किया जो आज हर भारतीय के जुबां पर है। इसका मुख्य मतलब बेवजह घर से बाहर निकलने पर रोक होती है, जरूरत के सामग्री को खरीदने हेतु ही प्रोटोकाल के अनुसार ही बाहर निकला जा सकता है।

सोशल डिस्टेंसिंग:- अर्थात सामाजिक दूरी। कोरोना काल में सबसे ज्यादा इस्तेमाल होने वाला शब्द है। यदि कोरोना वायरस से बचना है तो लोगों के बीच कम से कम दो गज की दूरी का पालन करना है।

क्वारंटाईन:- इस शब्द का शाब्दिक अर्थ है पृथक रखना। कोरोना काल में जो कोरोना वायरस से पीड़ित हो या सिर्फ संक्रमण का अंदेशा होने के आधार पर उस व्यक्ति को अन्य लोगों के संपर्क में न लाने के कारण, उसे एक अलग जगह पर 14 दिनों के लिए रखा जाता है।

सेल्फ आईसोलेशन:- यदि कोई व्यक्ति किसी कोरोना संक्रमित व्यक्ति के सम्पर्क में आता है तो वह स्वंय को अन्य लोगों से कुछ दिनों के लिए पृथक रख कर संक्रमण के फैलाव को रोकता है।

पेंडेमिक:- कोरोना वायरस के बढ़ते प्रभाव तथा मानव जाति पर इस असर को देखते हुए विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा इस वायरस के प्रभाव को पेंडेमिक अर्थात महामारी घोषित किया गया है। क्योंकि इस कारण असर सम्पूर्ण विश्व पर लगभग एक समान है।

आउट ब्रेक:- किसी बीमारी का अचानक फैल जाना। वर्ष 2020 के आरंभ होते ही अचानक से कोरोनावायरस का पूरे विश्व में फैलना शुरु हो गया था। महज 3 महीनों में ही भारत के लगभग 5 लाख लोगों को अपनी चपेट में ले चुका था।

वर्क फ्रोम होम:- अंग्रेजी में इसके लिए WFH का इस्तेमाल हो रहा है। लॉकडाउन के बीच घर से बाहर लोगों को निकलने पर पाबंदी थी। इसलिए बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने अपने कर्मचारियों से वर्क फ्रोम होम अर्थात घर पर रह कर ही विभिन्न प्रकार के संचार के माध्यमों का उपयोग करते हुए कम्पनी के लिए कार्य करने की प्रथा को लागू किया। इसके अतिरिक्त बोल चाल की भारतीय भाषाओं में और भी ऐसे शब्द थे जिनका प्रयोग इस कोविड-19 के दौर में ज्यादा हुआ। जैसे मास्क, सैनेटाईजर, अनलॉक, फेसशील्ड, अल्कोहालिक, दो गज इत्यादि।

कोरोना काल में उपर्युक्त सभी शब्द न केवल हिंदी बल्कि

सभी भारतीय भाषाओं में समान रूप से प्रचलित हुए हैं। यदि भारतीय भाषाओं पर कोरोना के सकारात्मक प्रभाव की बात करें तो, सिर्फ भाषाओं में नये शब्दों का विस्तार ही नहीं हुआ है बल्कि हमें कोरोना के प्रति जागरूक और स्वस्थ रखने के लिए इस काल में कुछ बुद्धिजीवियों ने भारतीय भाषाओं के नये-नये स्लोगन व वाक्यों का प्रयोग भी किया है; **उदाहरणत:-**

- दो गज की दूरी, मास्क है जरुरी।
- खुद डरें नहीं, न ही दूसरों को डरायें।
- कोरोना वायरस के प्रति, लोगों को जागरुक बनायें।
- बड़े बुजुर्गों का रखें ख्याल, तोड़ें हम कोरोना का जाल।

  तीसरे चरण में रहें सतर्क, क्योंकि रखना है बच्चों का ख्याल।
- स्वच्छता अपनाओं, कोरोना को जड़ से हटाओ।

प्रत्येक सिक्के के दो पहलू होते हैं, एक सकारात्मक एवं एक नकारात्मक कोरोना काल में हमने भाषाओं पर इसके सकारात्मक प्रभाव को तो देख ही लिया और अब भारतीय भाषाओं पर इसके नकारात्मक प्रभाव पर भी एक नजर डालते हैं।

नाकारात्मक प्रभाव

कोरोना काल में भारतीय भाषाओं पर प्रतिकूल एवं नाकारात्मक प्रभाव ज्यादा पड़ा है। क्योंकि हम जानते हैं कि भाषाओं से विचारों का आदान-प्रदान होता है। विचार विमर्श होतें हैं, जिसके लिए व्यक्ति विशेष समूह एवं आपसी मेल-जोल का होना आवश्यक है, परंतु इस वैश्विक महामारी में सुरक्षा के लिहाज से आपसी मिलन न के बराबर ही था। जिसने कहीं न कहीं भाषाओं के विस्तार को प्रभावित किया है। कुछ अन्य घटक भी हैं जिनका कहीं न कहीं अप्रत्यक्ष रुप से हमारी भाषाओं पर प्रतिकूल प्रभाव रहा है। कुछ उल्लेखनीय बिंदु निम्नलिखित है :-

- **सामाजिक जीवन में प्रगति के माध्यम में अवरोध :-**

हमारी भारतीय भाषाऐं हमारे परिवार को ही नहीं अपितु समाज सहित पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोये रखती हैं। भारतीय समाज के लोग विभिन्न क्षेत्रों में सुख-दुख की सभी परिस्थितियों में अलग-अलग धर्म के लोगों के साथ मिलजुल कर रहते हैं। उस क्षेत्र का विकास भी कहीं न कहीं विभिन्न भाषाओं के आदान-प्रदान से व्यापारिक स्तर पर तथा नैतिक नीति से सामाजिक परिवेश में संभव हो पाता है।

परंतु इस कोरोना काल में लॉकडाउन की स्थिति में विगत वर्ष के आरंभिक तीन महीनों तक तो क्षेत्रीय व्यापार में प्रगति हेतु बोलचाल वाली भाषाओं का उपयोग ना के बराबर ही हुआ।

- **शैक्षणिक क्षेत्र में भारतीय भाषाओं पर प्रभाव**

भाषा मनुष्य की शिक्षा का आधार है, जबसे यह कोरोना काल का दौर शुरु हुआ है,कहीं ना कहीं बच्चों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार के विद्यालय, शैक्षणिक संस्थान न के बराबर ही खुले हैं। जबकि हमें पता है कि भाषाओं का आदान-प्रदान एवं उनकी उपयोगिता व्यक्ति के विकास का सर्वोत्तम माध्यम विद्यालय व शैक्षणिक संस्थान ही है।

परंतु इस वैश्विक महामारी के प्रलय रुप के चलते अबतक शैक्षणिक क्षेत्र बंद ही है। जिससे हमारी भारतीय भाषाओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

- **साहित्य, कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में भारतीय भाषाओं का व्यापक प्रचार प्रसार ना होना**

भाषा नहीं होती तो साहित्य भी नहीं होता। साहित्य को भाषा

के माध्यम से ही लिखा जाता है। इसी तरह कला के मुखरित होने के लिए भी भाषा आवश्यक है।जब वायुमंडल में शब्द गूंजते हैं तो श्रोता गदगद हो जाते हैं।

परंतु इस कोरोना अवधि के दौरान बहुत कम ही ऐसी पुस्तकें लिखीं गईं जो भौतिक रूप से पाठकों के हाथों में पहुंचीं। इससे इस अवधि में साहित्य को कोई बहुत बढ़ावा तो मिला नहीं साथ ही भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार हेतु न ही वैश्विक स्तर पर कोई सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुआ। अतः साहित्य एवं सांस्कृतिक क्षेत्र भी कोरोना महामारी के प्रभाव से अछूता ना रहा।

◆ लॉकडाउन की वजह से बच्चों के व्यक्तित्व एवं संस्कार निर्माण में मातृभाषा के प्रभाव में कमी

बच्चों को अपनी मातृभाषा को समझना होगा। माता के अलावा संस्कार का दूसरा स्रोत बच्चे का प्राकृतिक एवं सामाजिक परिवेश ही होता है, जिसमें वह जन्म लेता है। शरीर के रंगरूप के साथ ही आदतें बनाता है। सामाजिक परिवेश के अन्तर्गत परिवार, मुहल्ला, गाँव, विद्यालय के सहपाठी, मित्र, पड़ोसी व शिक्षक आते हैं। ये बच्चों को उनकी संस्कृति व मातृभाषा समझाने में सहायक होते हैं।

परंतु इस कोरोना काल में विद्यार्थियों और अन्य बालकों की लगभग सभी प्रकार के सामाजिक परिवेश से दूरी हो चुकी है, जो कहीं ना कहीं हमारी भारतीय भाषाओं पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहा है।

◆ पर्यटन उद्योग में गिरावट से भारतीय भाषाओं के वैश्विक एवं व्यापारिक स्तर पर प्रचार-प्रसार में कमी

किसी भी देश की भाषा उसके विकास की सारथी होती है। भारत में आज भी हमारे पूर्वजों के ऐसे धरोहर, स्मारक, तीर्थ स्थल हैं, जिसे देखने के लिए विदेशों के लोग आतें हैं। वे कहीं न कहीं हमारी संस्कृति से सीखते और भाषाओं का उपयोग भी करते हैं, जैसे कि इस कोरोनाकाल में भारत में "हाथ जोड़ कर नमस्ते करने" की प्रथा को पूरे विश्व ने माना और इसे उपयोग में लिया।

परंतु कोरोना काल में पर्यटन उद्योग बंद होने की वजह से कहीं न कहीं हमारी भारतीय भाषाओं पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

इस कोरोना अवधि में भाषागत विचारों के आपसी आदान प्रदान का माध्यम कहीं न कहीं आधुनिक संचार साधन बन रहे हैं और सोशल मीडिया जैसे मंचों का ज्यादा उपयोग हो रहा है। परंतु एक भारतीय होने के नाते अब समय आ गया है कि हम अपनी आने वाली पीढ़ी को मातृभाषा और अन्य भारतीय भाषाओं की उपयोगिता के बारे में बतायें। उनके साथ भावनात्मक तरीके से सामाजिक व प्राकृतिक परिवेश में रह कर उनके एवं देश के सर्वांगीण विकास में हाथ बटाएं। क्योंकि किसी भी देश की प्रगति की आधारशिला उसकी भाषा होती है।

सरकार को भी अपनी भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार हेतु समय-समय पर क्षेत्रीय प्रतियोगिताएँ करानी चाहिए। जिससे आम नागरिक प्रोत्साहित हों। निश्चित रुप से हम कह सकते हैं कि अनेक बोलियों व भाषाओं से मिलकर ही भारत राष्ट्र बना। यहाँ की भाषाएं हमारा स्वाभिमान है।

कोरोना ने हर क्षेत्र, चाहे वो आर्थिक, सामाजिक, व्यापारिक, शैक्षणिक अथवा नैतिक हो,सभी में प्रतिकूल प्रभाव डाला है। कहीं ना कहीं हमारी संस्कृति एवं हमारी भारतीय भाषाओं में इसका प्रभाव काफी असरदार रहा है। परंतु हमारी विविधता ही देश की पहचान है। इसलिए हमें दो गज की दूरी बना कर भी भाषाओं का आदान प्रदान करते रहना चाहिए एवं समय रहते अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाह करते हुए कोरोना रहित भारत निर्माण की ओर अग्रसर होना चाहिए। हमारी भाषाएं ही हमारे संस्कार की नीव है जो हमें भविष्य में एक सामाजिक व्यक्तित्व के साथ भावनात्मक इंसान भी बनाती है।

◆ ◆ ◆

उप निरीक्षक
केऔसुब, इकाई बीसीसीएल धनबाद

बड़ी कलम

हिंदी साहित्य के सुप्रसिद्ध कथाकार प्रेमचंद जी ने आमजनों जैसे; किसानों, महिलाओं, गरीबों और दलितों आदि के जीवन के यथार्थ को अपनी कहानियों की विषय-वस्तु बनाया है। इस अंक में प्रस्तुत है उनकी प्रसिद्ध कहानी 'पूस की रात' जिसमें गरीबी और कर्ज से दबे एक मजबूर किसान के जीवन-यथार्थ का चित्रण किया गया है।

पूस की रात

- प्रेमचंद

[1]

हल्कू ने आकर स्त्री से कहा- सहना आया है, लाओ, जो रुपये रखे हैं, उसे दे दूँ, किसी तरह गला तो छूटे। मुन्नी झाड़ू लगा रही थी। पीछे फिरकर बोली-तीन ही रुपये हैं; दे दोगे तो कम्मल कहाँ से आवेगा? माघ-पूस की रात हार में कैसे कटेगी? उससे कह दो,फसल पर रुपये दे देंगे। अभी नहीं।

हल्कू एक क्षण अनिश्चित दशा में खड़ा रहा। पूस सिर पर आ गया, बिना कम्मल के हार में रात को वह किसी तरह नहीं जा सकता। मगर सहना मानेगा नहीं, घुड़कियाँ जमावेगा, गालियाँ देगा। बला से जाड़ों मरेंगे, बला तो सिर से टल जाएगी। यह सोचता हुआ वह अपना भारी-भरकम डील लिए हुए (जो उसके नाम को झूठ सिद्ध करता था) स्त्री के समीप आ गया और खुशामद करके बोला-लादे दे, गला तो छूटे। कम्मल के लिए कोई दूसरा उपाय सोचूँगा।

मुन्नी उसके पास से दूर हट गई और आँखें तरेरती हुई बोली-कर चुके दूसरा उपाय! जरा सुनूँ, तो कौन उपाय करोगे? कोई खैरात दे देगा कम्मल? न जाने कितनी बाकी है जो किसी तरह चुकने ही नहीं आती। मैं कहती हूँ, तुम क्यों नहीं खेती छोड़ देते? मर-मर काम करो, उपज हो तो बाकी दे दो, चलो छुट्टी हुई। बाकी चुकाने के लिए ही तो हमारा जनम हुआ है। पेट के लिए मजूरी करो। ऐसी खेती से बाज आए। मैं रुपये न दूंगी-न दूंगी।

हल्कू उदास होकर बोला- तो क्या गाली खाऊँ।

मुन्नी ने तड़पकर कहा- गाली क्यों देगा, क्या उसका राज है?

मगर यह कहने के साथ ही उसकी तनी हुई भौहें ढीली पड़ गईं। हल्कू के उस वाक्य में जो कठोर सत्य था, वह मानो एक भीषण जंतु की भाँति उसे घूर रहा था।

उसने जाकर आले पर से रुपये निकाले और लाकर हल्कू के हाथ पर रख दिए। फिर बोली-तुम छोड़ दो अबकी से खेती। मजूरी में सुख से एक रोटी तो खाने को मिलेगी। किसी की धौंस तो न रहेगी। अच्छी खेती है! मजूरी करके लाओ, वह भी उसी में झोंक दो, उस पर धौंस।

हल्कू ने रुपये लिये और इस तरह बाहर चला, मानो अपना हृदय निकाल कर देने जा रहा हो। उसने मजूरी से एक-एक पैसा काट-काटकर तीन रुपये कम्मल के लिए जमा किए थे। वह आज निकले जा रहे थे। एक-एक पग के साथ उसका मस्तक अपनी दीनता के भार से दबा जा रहा था।

[2]

पूस की अँधेरी रात! आकाश पर तारे भी ठिठुरते हुए मालूम होते थे। हल्कू अपने खेत के किनारे ऊख के पत्तों की एक छतरी के नीचे बाँस के खटोले पर अपनी पुरानी गाढ़े की चादर ओढ़े काँप रहा था। खाट के नीचे उसका संगी कुत्ता जबरा पेट में मुँह डाले सर्दी से कूँ-कूँ कर रहा था। दो में से एक को भी नींद नहींआ रही थी।

हल्कू ने घुटनियों को गर्दन में चिपकाते हुए कहा-क्यों जबरा, जाड़ा लगता है? कहता तो था, घर में पुआल पर लेटा रह, तो यहाँ क्या लेने आये थे। अब खाओ ठंड, मैं क्या करूँ। जानते थे, मैं यहाँ हलुवा - पूरी खाने आ रहा हूँ, दोड़े - दौड़े आगे - आगे चले आये। अब रोओ नानी के नाम को।

जबरा ने पड़े-पड़े दुम हिलाई और अपनी कूँ-कूँ को दीर्घ बनाता हुआ एकबार जम्हाई लेकर चुप हो गया। उसकी श्वान-बुद्धि ने शायद ताड़ लिया, स्वामी को मेरी कूँ-कूँ से नींद नहीं आ रही है।

हल्कू ने हाथ निकालकर जबरा की ठंडी पीठ सहलाते हुए कहा-कल से मत आना मेरे साथ, नहीं तो ठंडे हो जाओगे। यह राँड पछुआ न जाने कहाँ से बर्फ लिए आ रही है। उठूँ, फिर एक चिलम भरूँ। किसी तरह रात तो कटे! आठ चिलम तो पी चुका। यह खेती का मजा है! और एक-एक भगवान ऐसे पड़े हैं, जिनके पास जाड़ा जाए तो गर्मी से घबड़ाकर भागे। मोटे-मोटे गद्दे, लिहाफ-कम्बल। मजाल है कि जाड़े का गुजर हो जाए। तकदीर की खूबी है! मजूरी हम करें, मजा दूसरे लूटें!

हल्कू उठा, गड्ढे में से जरा सी आग निकालकर चिलम भरी। जबरा भी उठ बैठा।

हल्कू ने चिलम पीते हुए कहा, पिएगा चिलम, जाड़ा तो क्या जाता है, जरा मनबदल जाता है।

जबरा ने उसके मुँह की ओर प्रेम से छलकती हुई आँखों से देखा।

हल्कू-आज और जाड़ा खा ले। कल से मैं यहाँ पुआल बिछा दूँगा। उसी में घुसकर बैठना, तब जाड़ा न लगेगा।

जबरा ने अगले पंजे उसकी घुटनियों पर रख दिए और उसके मुँह के पास अपना मुँह ले गया। हल्कू को उसकी गर्म साँस लगी।

चिलम पीकर हल्कू फिर लेटा और निश्चय करके लेटा कि चाहे कुछ हो अबकी सो जाऊँगा, पर एक ही क्षण में उसके हृदय में कम्पन होने लगा। कभी इस करवट लेटता, कभी उस करवट, पर जाड़ा किसी पिशाच की भाँति उसकी छाती को दबाए हुए था।

जब किसी तरह न रहा गया तो उसने जबरा को धीरे-से उठाया और उसके सिर को थपथपाकर उसे अपनी गोद में सुला लिया। कुत्ते की देह से जाने कैसी दुर्गंध आ रही थी; पर वह उसे अपनी गोद में चिपटाए हुए ऐसे सुख का अनुभव कर रहा था, जो इधर महीनों से उसे न मिला था। जबरा शायद यह समझ रहा था कि स्वर्ग यही है; और हल्कू की पवित्र आत्मा में तो उस कुत्ते के प्रति घृणा की गंध तक न थी! अपने किसी अभिन्न मित्र या भाई को भी वह इतनी ही तत्परता से गले लगाता। वह अपनी दीनता से आहत न था, जिसने आज उसे इस दशा को पहुँचा दिया। नहीं, इस अनोखी मैत्री ने जैसे उसकी आत्मा के सब द्वार खोल दिए थे और उनका एक-एक अणु प्रकाश से चमक रहा था।

सहसा जबरा ने किसी जानवर की आहट पाई। इस विशेष आत्मीयता ने उसमे एक नई स्फूर्ति पैदा कर दी थी, जो हवा के ठंडे झोंकों को तुच्छ समझती थी। वह झपटकर उठा और छपरी से बाहर आकर भूँकने लगा। हल्कू ने उसे कई बार चुमकार कर बुलाया; पर वह उसके पास न आया। हार में चारो तरफ दौड़-दौड़कर भूँकता रहा। एक क्षण के लिए आ भी जाता, तो तुरंत ही फिर दौड़ता। कर्त्तव्य उसके हृदय में अरमान की भाँति ही उछल रहा था।

[3]

एक घंटा और गुजर गया। रात ने शीत को हवा से धधकाना शुरू किया। हल्कू उठ बैठा और दोनों घुटनों को छाती से मिलाकर सिर को उसमें छिपा लिया। फिर भी ठंड कम न हुई, ऐसा जान पड़ता था, सारा रक्त जम गया है; धमनियों में रक्त की जगह हिम बह रहा है। उसने झुककर आकाश की ओर देखा, अभी कितनी रात बाकी है! सप्तर्षि अभी आकाश में आधे भी नहीं चढ़े। ऊपर आ जाएँगे तब कहीं सबेरा होगा। अभी पहर भर से ऊपर रात है।

हल्कू के खेत से कोई एक गोली के टप्पे पर आमों का एक बाग था। पतझड़ शुरू हो गई थी। बाग में पत्तियों का ढेर लगा हुआ था। हल्कू ने सोचा, चलकर पत्तियाँ बटोरूँ और उन्हें जलाकर खूब तापूँ। रात को कोई मुझे पत्तियों बटोरते देखे, तो समझे, कोई भूत है। कौन जाने, कोई जानवर ही छिपा बैठा हो; मगर अब तो बैठे नहीं रहा जाता।

उसने पास के अरहर के खेत में जाकर कई पौधे उखाड़ लिए और उनका एक झाड़ू बनाकर हाथ में सुलगता हुआ उपला लिये बगीचे की तरफ चला। जबरा ने उसे आते देखा तो पास आया और दुम हिलाने लगा।

हल्कू ने कहा-अब तो नहीं रहा जाता जबरू! चलो, बगीचे में पत्तियों बटोरकर तापें। टाँठे हो जाएँगे, तो फिर आकर सोएँगे। अभी तो रात बहुत है।

जबरा ने कूँ-कूँ करके सहमति प्रकट की और आगे-आगे बगीचे की और चला।

बगीचे में खूब अँधेरा छाया हुआ था और अंधकार में निर्दय पवन पत्तियों को कुचलता हुआ चला जाता था। वृक्षों से ओस की बूँदे टप-टप नीचे टपक रहीं थीं।

एकाएक एक झोंका मेंहदी के फूलों की खूशबू लिए हुए आया।

हल्कू ने कहा-कैसी अच्छी महक आई जबरू! तुम्हारी नाक में भी तो सुगंध आ रही है?

जबरा को कहीं जमीन पर एक हड्डी पड़ी मिल गई थी। उसे चिचोड़ रहा था।

हल्कू ने आग जमीन पर रख दी और पत्तियाँ बटोरने लगा। जरा देर में पत्तियों का एक ढेर लग गया। हाथ ठिठुरे जाते थे। नंगे पाँव गले जाते थे। और वह पत्तियों का पहाड़ खड़ा कर रहा था। इसी

अलाव में वह ठंड को जलाकर भस्म कर देगा।

थोड़ी देर में अलाव जल उठा। उसकी लौ ऊपर वाले वृक्ष की पत्तियों को छू-छूकर भागने लगी। उस अस्थिर प्रकाश में बगीचे के विशाल वृक्ष ऐसे मालूम होते थे, मानो उस अथाह अंधकार को अपने सिरों पर सँभाले हुए हों। अन्धकार के उस अनंत सागर में यह प्रकाश एक नौका के समान हिलता, मचलता हुआ जान पड़ता था।

हल्कू अलाव के सामने बैठा आग ताप रहा था। एक क्षण में उसने दो हर उतार कर बगल में दबा ली और दोनों पाँव फैला दिए, मानो ठंड को ललकार रहा हो, तेरे जी में जो आए सो कर। ठंड की असीम शक्ति पर विजय पाकर वह विजय-गर्व को हृदय में छिपा न सकता था।

उसने जबरा से कहा - क्यों जब्बर, अब ठंड नहीं लग रही है?

जब्बर ने कूँ-कूँ करके मानो कहा-अब क्या ठंड लगती ही रहेगी।

'पहले से यह उपाय न सूझा, नहीं इतनी ठंड क्यों खाते।'

जबरा ने पूँछ हिलाई।

'अच्छा आओ, इस अलाव को कूदकर पार करें। देखें, कौन निकल जाताहै। अगर जल गए बच्चे , तो मैं दवा न करूँगा।'

जबरा ने उस अग्निराशि की ओर का तर नेत्रों से देखा!

'मुन्नी से कल न कह देना, नहीं तो लड़ाई करेगी।'

यह कहता हुआ वह उछला और उस अलाव के ऊपर से साफ निकल गया! पैरों में जरा लपट लगी; पर वह कोई बात न थी। जबरा आग के गिर्द घूमकरउसके पास आ खड़ा हुआ।

हल्कू ने कहा-चलो-चलो, इसकी सही नहीं। ऊपर से कूदकर आओ। वह फिर कूदा और अलाव के इस पार आ गया।

[4]

पत्तियाँ जल चुकी थीं। बगीचे में फिर अँधेरा छाया था। राख के नीचे कुछ-कुछ आग बाकी थी, जो हवा का झोंका आ जाने पर जरा जाग उठती थी, पर एक क्षण में फिर आँखें बन्द कर लेती थी!

हल्कू ने फिर चादर ओढ़ ली और गर्म राख के पास बैठा हुआ एक गीत गुनगुनाने लगा। उसके बदन में गर्मी आ गई थी, पर ज्यों-ज्यों शीत बढ़ती जाती थी, उसे आलस्य दबाए लेता था।

जबरा जोर से भूँककर खेत की ओर भागा। हल्कू को ऐसा मालूम हुआ जानवरों का एक झुण्ड खेत में आया है। शायद नीलगायों का झुण्ड था। उनके कूदने-दौड़ने की आवाजें साफ कान में आ रही थी। फिर ऐसा मालूम हुआ कि वह खेत में चर रहीं हैं। उनके चबाने की आवाज चर-चर सुनाई देने लगी। उसने दिल में कहा - नहीं, जबरा के होते कोई जानवर खेत में नहीं आ सकता। नोच ही डाले। मुझे भ्रम हो रहा है। कहाँ! अब तो कुछ नहीं सुनाई देता। मुझे भी कैसा धोखा हुआ!

उसने जोर से आवाज लगायी-जबरा, जबरा।

जबरा भूँकता रहा। उसके पास न आया।

फिर खेत के चरे जाने की आहट मिली। अब वह अपने को धोखा न दे सका। उसे अपनी जगह से हिलना जहर लग रहा था। कैसा दंदाया हुआ बैठा था। इस जाड़े-पाले में खेत में जाना, जानवरों के पीछे दौड़ना असूझ जान पड़ा। वह अपनी जगह से न हिला।

उसने जोर से आवाज लगायी - हिलो-हिलो! हिलो!!

जबरा फिर भूँक उठा। जानवर खेत चर रहे थे। फसल तैयार है। कैसी अच्छी खेती थी, पर ये दुष्ट जानवर उसका सर्वनाश किए डालते हैं।

हल्कू पक्का इरादा करके उठा और दो-तीन कदम चला, पर एकाएक हवा का ऐसा ठंडा, चुभने वाला, बिच्छू के डंक का-सा झोंका लगा कि वह फिर बुझते हुए अलाव के पास आ बैठा और राख को कुरेदकर अपनी ठंडी देह को गर्माने लगा।

जबरा अपना गला फाड़े डालता था, नील गायें खेत का सफाया किए डालती थीं। और हल्कू गर्म राख के पास शांत बैठा हुआ था। अकर्मण्यता ने रस्सियों की भाँति उसे चारों तरफ से जकड़ रखा था।

उसी राख के पास गर्म जमीन पर वह चादर ओढ़कर सो गया।

सबेरे जब उसकी नींद खुली, तब चारों तरफ धूप फैली गई थी और मुन्नी कह रही थी - क्या आज सोते ही रहोगे? तुम यहाँ आकर रम गए और उधर सारा खेत चौपट हो गया।

हल्कू ने उठकर कहा-क्या तू खेत से होकर आ रही है?

मुन्नी बोली-हाँ, सारे खेत का सत्यानाश हो गया। भला, ऐसा भी कोई सोता है। तुम्हारे यहाँ मँडैया डालने से क्या हुआ।

हल्कू ने बहाना किया-मैं मरते-मरते बचा, तुझे अपने खेत की पड़ी है। पेट में ऐसा दरद हुआ कि मैं ही जानता हूँ!

दोनों फिर खेत की डाँड़ पर आये। देखा सारा खेत रौंदा पड़ा हुआ है, और जबरा मँडैया के नीचे चित लेटा है; मानो प्राण ही न हों दोनों खेत की दशा देख रहे थे। मुन्नी के मुख पर उदासी छायी थी, पर हल्कू प्रसन्न था।

मुन्नी ने चिंतित होकर कहा-अब मजूरी करके मालगुजारी भरनी पड़ेगी।

हल्कू ने प्रसन्न मुख से कहा-रात की ठंड में यहाँ सोना तो न पड़ेगा।

◆ ◆ ◆

प्रेरक व्यक्तित्व

हिंदी प्रहरी - राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन

- डॉ. मनोज कुमार

प्रारंभिक जीवन

पुरुषोत्तम दास टंडन का जन्म 01 अगस्त, 1882 को उत्तर प्रदेश के प्रयागराज शहर में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा वहीं के सिटी एंग्लो वर्नाक्यूलर स्कूल में हुई। सन् 1894 में उन्होंने इसी स्कूल से मिडिल की परीक्षा उत्तीर्ण की। हाई स्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद उनका विवाह मुरादाबाद निवासी चन्द्रमुखी देवी के साथ करा दिया गया। सन् 1899 में वे कांग्रेस पार्टी में शामिल हो गए और उसी साल इण्टरमीडिएट की परीक्षा भी उत्तीर्ण की। सन् 1900 में उनकी पत्नी ने एक कन्या को जन्म दिया। लगभग इस दौरान वे स्वतंत्रता संग्राम में शामिल हो गए। इंटरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद आगे की पढ़ाई के लिए उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय के म्योर सेण्ट्रल कॉलेज में दाखिला लिया परन्तु अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों के कारण उन्हें सन् 1901 में कॉलेज से निष्कासित कर दिया गया।

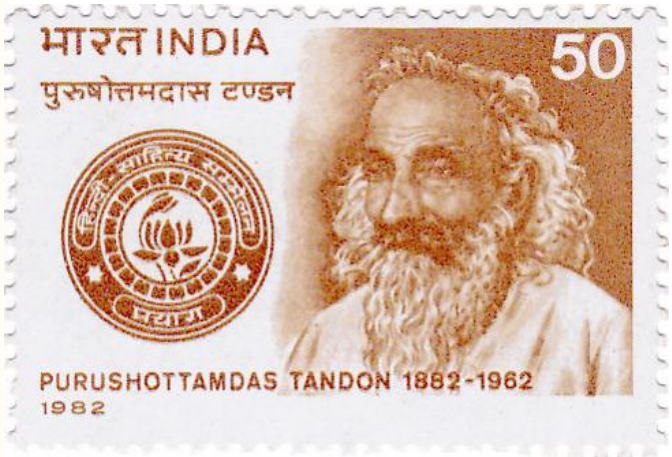

सन् 1903 में उनके पिता का स्वर्गवास हो गया। इन सब कठिन परिस्थितियों के मध्य उन्होंने सन् 1904 में स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके बाद उन्होंने इतिहास विषय में स्नातकोत्तर किया और फिर कानून की पढ़ाई करने के बाद सन् 1906 में वकालत प्रारंभ कर दिया। इसके पश्चात वे उस समय के प्रसिद्ध अधिवक्ता तेज बहादुर सप्रू की देख-रेख में इलाहाबाद उच्च न्यायालय में वकालत करने लगे। स्वाधीनता आन्दोलन और सामाजिक गतिविधियों के लिए उन्होंने सन् 1921 में अपनी वकालत छोड़ दी।

स्वतंत्रता सेनानी

पुरूषोत्तम दास टंडन एक भारतीय स्वतन्त्रता सेनानी, राजनयिक, हिन्दी भाषा के सेवक, पत्रकार, वक्ता और समाज सुधारक थे। अपने निजी जीवन में सादगी अपनाने के कारण उन्हें राजर्षि उपनाम से प्रसिद्धि प्राप्त हुई। हिन्दी को देश की राजभाषा का स्थान दिलाने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। उन्होंने सन् 1910 में 'नागरी प्रचारिणी सभा', वाराणसी, में 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' की स्थापना की। स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान वे कई बार जेल भी गए। वे 13 साल तक यूनाइटेड प्रोविंस विधान सभा का अध्यक्ष भी रहे। स्वाधीनता आन्दोलन के साथ-साथ वे कृषक आंदोलनों से भी जुड़े थे। आजादी के बाद वे लोक सभा व राज्य सभा के लिए चुने गए।

राजनीतिक जीवन

सन् 1905 में उनके राजनीतिक जीवन का प्रारंभ हुआ जब बंगाल विभाजन के विरोध में समूचे देश में आन्दोलन हो रहा था। बंगभंग आन्दोलन के दौरान उन्होंने स्वदेशी अपनाने का प्रण किया और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार प्रारंभ किया। अपने विद्यार्थी जीवन में ही सन् 1899 में वे कांग्रेस पार्टी का सदस्य बन गए थे। सन् 1906 में उन्होंने अखिल भारतीय कांग्रेस समिति में इलाहाबाद का प्रतिनिधित्व किया। कांग्रेस पार्टी ने जलियाँवालाबाग कांड के जांच के लिए जो समिति बनाया था उसमे पुरुषोत्तम दास टंडन भी शामिल थे। वे 'लोक सेवक संघ' का भी हिस्सा रहे थे। 1920 और 1930 के दशक में उन्होंने असहयोग आन्दोलन और नमक सत्याग्रह में भाग लिया और जेल गए। सन् 1931 में गाँधी जी के लन्दन गोलमेज सम्मलेन से वापस आने से पहले गिरफ्तार किये गए नेताओं में जवाहरलाल नेहरु के साथ-साथ वे भी थे। पुरुषोत्तम दास टंडन कृषक आंदोलनों से भी जुड़े रहे और सन् 1934 में बिहार प्रादेशिक किसान सभा का अध्यक्ष भी रहे। वे लाला लाजपत राय द्वारा स्थापित 'लोक सेवा मंडल' के अध्यक्ष भी रहे।

वे यूनाइटेड प्रोविंस (आधुनिक उत्तर प्रदेश) की विधान सभा के 13 साल (1937-1950) तक अध्यक्ष रहे। उन्हें सन् 1946 में भारत के संविधान सभा में भी सम्मिलित किया गया। आजादी के बाद सन् 1948 में उन्होंने कांग्रेस अध्यक्ष पद के लिए पट्टाभि सितारमैय्या के विरुद्ध चुनाव लड़ा पर हार गए। सन् 1950 में उन्होंने आचार्य जे. बी. कृपलानी को हराकर कांग्रेस अध्यक्ष पद हासिल किया पर प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु के साथ वैचारिक मतभेद के कारण उन्होंने कांग्रेस अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे दिया। सन् 1952 में वे लोक सभा और सन् 1956 में राज्य सभा के लिए चुने गए। इसके बाद ख़राब स्वास्थ्य के चलते उन्होंने सक्रिय सार्वजानिक जीवन से संन्यास ले लिया। सन् 1961 में भारत सरकार ने उन्हें देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया।

देश के विभाजन पर उनका मत एवं हिंदी के समर्थक

12 जून, 1947 को कांग्रेस कार्य समिति ने देश के विभाजन को स्वीकार कर लिया। जब 14 जून को इस प्रस्ताव को अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के समक्ष मंजूरी के लिए रखा गया तब इसका विरोध करने वालों में से एक पुरुषोत्तम दास टंडन भी थे। उनका कहना था कि विभाजन स्वीकार करने का मतलब था अंग्रेजों और मुस्लिम लीग के सामने झुकना। उन्होंने कहा कि विभाजन से किसी का भी भला नहीं होगा – पाकिस्तान में हिन्दू और यहाँ भारत में मुसलमान डर के वातावरण में जीवन व्यतीत करेंगे।

हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाने में राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन का बड़ा योगदान था। 'हिंदी प्रचार सभाओं' के माध्यम से उन्होंने हिंदी को अग्र स्थान दिलाया। गाँधी और दूसरे नेता 'हिन्दुस्तानी' (उर्दू और हिंदी का मिश्रण) को राष्ट्रभाषा बनाना चाहते थे पर उन्होंने देवनागरी लिपि के प्रयोग पर बल दिया और हिंदी में उर्दू लिपि और अरबी-पारसी शब्दों के प्रयोग का भी विरोध किया।

साहित्य रचना कर्म

राजनीतिक व सामाजिक जीवन से सक्रिय रूप से जुड़े राजर्षि टंडन हिन्दी के प्रबल समर्थक तो थे ही उन्होने हिंदी में साहित्य सृजन भी किया है। भले ही साहित्य समीक्षकों की नजर उनके कृतित्व पर कम ही गयी हो किंतु इस बात में कोई सन्देह नहीं कि वे अच्छे रचनाकार भी थे। उनकी रचनाओं में तत्कालीन परिस्थितियां मुखर हुई हैं। साहित्यकार के रूप में टण्डन जी ने निबंध और कविताएं तो लिखीं ही हैं वे एक पत्रकार के रूप में दिखलाई पड़ते हैं।

उनके निबंधों में कविता, दर्शन और साहित्य, हिन्दी साहित्य का कानन, हिन्दी राष्ट्रभाषा क्यों, मातृभाषा की महत्ता, भाषा का सवाल, गौरवशाली हिन्दी, हिन्दी की शक्ति, कवि और दार्शनिक, भारतीय संस्कृति और कुम्भमेला, भारतीय संस्कृति संदेश, धन और उसका उपयोग आदि विशेष उल्लेखनीय हैं।काव्य रचनाओं में 'बन्दर सभा महाकाव्य', 'कुटीर का पुष्प' और 'स्वतंत्रता' आदि रचनाएं उल्लेखनीय हैं। उनकी रचनाओं में राष्ट्रीयता और देशभक्ति की प्रमुखता है।

महत्वपूर्ण घटनाक्रम

1882 : 01 अगस्त को जन्म हुआ
1899 : कांग्रेस पार्टी के सदस्य बने
1906 : वकालत प्रारम्भ किया
1908 : इलाहाबाद उच्च न्यायालय के बार में शामिल हुए
1908 : जाने-माने अधिवक्ता तेज बहादुर सप्रू के साथ एक कनिष्ठ अधिवक्ता के तौर पर कार्य प्रारंभ किया
1919 : जलियांवाला बाग हत्याकांड के जांच के लिए कांग्रेस पार्टी द्वारा गठित समिति का सदस्य बनाये गए
1921 : स्वाधीनता आन्दोलन के खातिर अपना वकालत का पेशा त्याग दिया
1934 : बिहार प्रदेश किसान सभा का अध्यक्ष निर्वाचित हुए
1937 : 31 जुलाई को उत्तर प्रदेश विधान सभा का अध्यक्ष चुने गए
1946 : संविधान सभा के लिए चुने गए
1947 : 14 जून को विभाजन के प्रस्ताव पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया
1948 : कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष पद के लिए हुए चुनाव में पट्टाभि सितारमैय्या से हार गए
1950 : आचार्य जे बी कृपलानी को हराकर कांग्रेस पार्टी का अध्यक्ष बने
1952 : लोक सभा का सदस्य बने
1956 : राज्य सभा का सदस्य बने
1961 : भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से नवाजा गया
1962 : 01 जुलाई को निधन हुआ

उप प्रबंधक (राजभाषा / जनसंपर्क)
राजभाषा एवं जनसंपर्क विभाग
वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड, नागपुर - 440001

स्वास्थ्य चर्चा

हेयर ट्रांसप्लांटेशन : (बालों का प्रत्यारोपण)

- डॉ. दीपक प्रकाश

जड़ यानी त्वचा समेत जीवित बाल के गुच्छे को एक जगह से दूसरी जगह प्रत्यारोपित करने को हेयर ट्रांसप्लांटेशन या बाल प्रत्यारोपण कहते हैं। यह कास्मेटिक सर्जरी के अंतर्गत आता है क्योंकि बालों को स्मार्टनेस की पहचान माना जाता है। इसे पुरुषों के गंजेपन के इलाज की अंतिम कड़ी भी माना जाता है। आजकल आंखों की पुतली, भौहें, दाढ़ी, छाती में बालों के प्रत्यारोपण के साथ-साथ कई बार सर्जरी के निशानों को छिपाने के लिए भी इसका सहारा लिया जाता है।

गंजेपन का इलाज डॉक्टर तथा मरीज दोनों की दक्षता तथा काबिलियत पर निर्भर करता है। इसके लिए सही कारणों का पता लगाना जरूरी है। इसका भी अनुमान चिकित्सक को ही लगाना होगा कि ग्राफ्ट के बाद रिजल्ट कैसा होगा । उदाहरण के रूप मे यदि ललाट के उपरी हिस्से के गंजेपन को ग्राफ्ट से ठीक कर दिया गया और कुछ वर्षों के बाद उसके बगल के हिस्से के बाल गिरने लगे तो एक आम मरीज की उलझन समझी जा सकती है। उसके मन में डॉक्टर के प्रति किस तरह का गुस्सा, आक्रोश और तनाव होगा, इसका अनुमान लगाना आसान होगा। अत: मरीज तथा चिकित्सक दोनों को बाल गिरने की प्रकृति को ध्यान में रखकर बाल प्रत्यारोपण का प्लान भविष्य को ध्यान में रखकर बनाना चाहिए।

यह पूरी तरह सुंदरता से जुड़ी सर्जरी है, अतः काफी सावधानी तथा दक्षता की दरकार होती है। पूरी दक्षता से किये गये प्रत्यारोपण के बाद प्राकृतिक तथा प्रत्यारोपित बालों में अंतर करना मुश्किल होता है। यह नयी जगहों पर उसी तरह व्यवहार करते हैं, जहां पहले मूल स्थान पर करते थे। बिल्कुल प्राकृतिक और स्वाभाविक रूप से। बड़ा होने पर कांट-छांट कर सकते हैं, शैंपु, साबुन, तेल लगा सकते हैं। जरूरत पड़ने पर डाई भी कर सकते हैं। बढ़ने तथा स्वस्थ रहने के लिए किसी भी तरह की दवा की भी जरूरत नहीं पड़ती। प्राकृतिक रूप से वृद्धि होती रहती है। पूरी तरह मुंडन कराने के बाद भी इनका बढ़ना मूल जगहों की तरह ही जारी रहता है।

ट्रांसप्लांटेशन के पीछे मूल उद्देश्य होता है सहजता। सामान्यतः बाल एक से चार के गुच्छे में उगते हैं। प्रत्यारोपण के लिए इसी गुच्छे को जड़ सहित निकाला जाता है। चूंकि अत्यंत स्वस्थ तथा अच्छे गुच्छे को प्रत्यारोपण के लिए निकाला जाता है। अतः देखने पर किसी भी तरह से कृत्रिमता का आभास नहीं देता।

प्रत्यारोपण के लिए जिन जगहों के बालों का चुनाव करते हैं,वहां घने बाल होने चाहिए।तभी बालों का चुनाव ग्राफ्ट के लिए किया जा सकता है।जहां घने बाल नहीं होते,वहां के बाल ग्राफ्ट के लिए नहीं लिये जा सकते। खोपड़ी के पिछले तथा किनारे के हिस्से के बाल काफी घने होते हैं। आमतौर पर इसे ही ग्राफ्ट के लिए लिया जाता है। लेकिन, कई बार खोपड़ी के पिछले हिस्से में भी बाल बहुत कम होते हैं, ऐसी स्थिति में छाती,पीठ तथा जांघों से ग्राफ्ट लिया जाता है लेकिन,इसमें काफी दक्षता की जरूरत होती है।

प्रत्यारोपित बाल कितने घने होंगे, यह प्रतिवर्ग सेंटीमीटर में ग्राफ्ट की संख्या पर निर्भर करता है। एक आम आदमी के सर में एक वर्ग सेमी में 80 फॉलिकुलर यूनिट से ज्यादा बाल होते हैं। अतः गंजे सर में 40 से अधिक फॉलिकुलर यूनिट ग्राफ्ट करने पर घना दिखेंगे। प्राकृतिक लुक के लिए इससे भी अधिक होना जरूरी है। लेकिन, ग्राफ्ट के नियम के इस लक्ष्य तक पहुंचना कठिन है।इस में काफी दक्षता की जरूरत होती है। गंजे सर पर अधिक घने बालों को ग्राफ्ट करने को डेंस पैकिंग कहते हैं।

बड़े क्षेत्र में बालों का प्रत्यारोपण कई सत्रों में किया जाता है। एक

ही सिटिंग में अधिक संख्या में ग्राफ्ट करने पर इसे मेगा और सुपर मेगा सेशन कहते हैं। मेगा सेशन में एक ही सिटिंग में 2000 फॉलिकुलर यूनिट तथा सुपर मेगा सेशन में 2800 यूनिट का ग्राफ्ट किया जाता है, जबकि गिगा सेशन में 5000 यूनिट से भी अधिक बाल ग्राफ्ट किये जाते हैं।

आजकल हेयर प्रत्यारोपण की जिस आधुनिक तकनीक को अपनाया जा रहा है इसकी शुरूआत सन्1930 ई. से हो गयी थी। तब सर्जन भौंहों तथा आंखों की पुतली में प्रत्यारोपण करते थे। गंजापन दूर करने के लिए इसका प्रयोग नहीं किया जाता था। पचास के दशक में पश्चिमी देशों के कॉस्मेटिक चिकित्सकों में सबसे पहले न्यूयार्क के नॉरमन ओरेंट्रेच नामक त्वचारोग विशेषज्ञ ने गंजेपन के इलाज के लिए पुरुषों में इस विधि का उपयोग किया। पहले ऐसा विश्वास किया जाता था कि नयी जगह पर बाल को प्रत्यारोपित करने पर विशेष फायदा नहीं होता। इसकी वृद्धि पुरानी जगहों जैसी नहीं होती, लेकिन ओरेंट्रेच ने बताया कि ग्राफ्ट करने के बाद नये स्थान पर बाल पुरानी जगहों की तरह ही बढ़ते हैं और पुरानी जगहों की तरह ही टिके रहते हैं। काफी वर्षों तक बालों को छोटे से भाग को ही प्रत्यारोपण के लिए प्रयोग में लाया जाता रहा। लेकिन, अस्सी के दशक में ब्राजील में छोटे-छोटे कई टुकड़ों का प्रत्यारोपण लोकप्रिय होने लगा, जबकि यूनाइटेड स्टेट्स के रोसमैन नामक डर्मेटोलॉजिस्ट ने ग्राफ्ट के हजारों टुकड़े को एक साथ प्रत्यारोपित करना शुरू किया।

अस्सी के दशक में ही लीवर नामक वैज्ञानिक ने स्टिरियो माइक्रोस्कोप का आविष्कार किया। इससे छोटे माइक्रोग्राफ्ट लेने में काफी आसानी होने लगी। इतना ही नहीं, रिकवरी टाइम में कमी के साथ-साथ दर्द का भी मामूली अहसास होने लगा। आज बालों के प्रत्यारोपण के बाद न तो आराम की जरूरत पड़ती है और न ही अस्पताल में भर्ती रहने की । आज ट्रांसप्लांट आउटडोर प्रोसेस के रूप में किया जाता है। इस विधि के दौरान मरीज को लोकल एनेस्थेसिया दिया जाता है। ऑपरेशन के पहले सर को शैंपु से धोया जाता है, उसके बाद जहां का बाल निकालना होता है, वहीं एंटी वैक्टेरियल एजेंट लगाया जाता है।

गंजेपन के कारण

बाल झड़ने या गिरने की समस्या पुरूषों में ही नहीं,महिलाओं में भी देखने को मिलती है। पुरूषों में यह समस्या कम उम्र में ही शुरू हो जाती है और इसका संबंध जीन से है।अनुवांशिक कारण भी इसके लिए कम जिम्मेदार नहीं हैं। पुरूषों में इसकी शुरूआत ललाट के उपरी हिस्से से होती है और धीरे-धीरे आगे की ओर बढ़ता जाता है। बाल झड़ने की क्रिया तब तक जारी रहती है,जब तक सर के आधे बाल समाप्त न हो जाएं।

बाल गिरने के कई कारण होते हैं खासकर वैसी जगहों में जो अक्सर सामान्य से अलग होता है।उदाहरण के रूप में लिया जाए तो सर के बाल झड़ना सामान्य है, किंतुचेहरे या शरीर के दूसरे भागों के बाल झड़ने लगे तो इसके कई मेडिकल कारण हो सकते हैं। अतः इसका इलाज समय रहते करा लेना चाहिए अन्यथा आगे चलकर कई तरह की परेशानियां होने की संभावना हो सकती है। सामान्य रूप से थायराइड की समस्या,त्वचा में संक्रमण, सेक्स हार्मोन्स का असामान्य स्राव,पालिसिस्टिक ओवेरियन सिंड्रोम,आयरन की कमी जैसी बीमारियों में बाल गिरने की शिकायतें होती हैं। यदि इन बीमारियों का इलाज समय रहते करा लिया जाए तो बालों का गिरना रुक जाता ही है, दुबारा नये बाल उगने भी लगते हैं।बीमारी की वजह से बालों का झड़ना अस्थायी होता है। रोग के इलाज के बाद यह समस्या सदा के लिए दूर हो जाती है।

गंजेपन का इलाज

गंजेपन का इलाज डॉक्टर तथा मरीज दोनों की दक्षता तथा काबिलियत पर निर्भर करता है।इसके लिए सही कारणों का पता

लगाना जरूरी है। इसका भी अनुमान चिकित्सक को ही लगाना होगा कि ग्राफ्ट के बाद परिणाम कैसा होगा। उदाहरण के रूप मे यदि ललाट के उपरी हिस्से के गंजेपन को ग्राफ्ट से ठीक कर दिया गया और कुछ वर्षों के बाद उसके बगल के हिस्से के बाल गिरने लगे तो एक आम मरीज की उलझन समझी जा सकती है। उसके मन में डॉक्टर के प्रति किस तरह का गुस्सा, आक्रोश और तनाव होगा, इसका अनुमान लगाना आसान होगा। अतः मरीज तथा चिकित्सक दोनों को बाल गिरने की प्रकृति को ध्यान में रखकर बाल प्रत्यारोपण का प्लान भविष्य को ध्यान में रखकर बनाना चाहिए।

बाल गिरने के कारणों की जांच करते वक्त माता तथा पिता दोनों के परिवारों की जांच जरूरी है तभी सही-सही कारणों का पता लगाया जा सकता है।

पुरूषों में गंजेपन के मूल कारण अनुवांशिक होते हैं। सामान्यतः शुरूआती दौर में बाल पतले होने लगते हैं और जड़ें कमजोर हो जाती हैं। जड़ों की वृद्धि तो रुक ही जाती है और नये बालों का उगना भी बंद हो जाता है। उम्र बढ़ने के साथ-साथ बालों का बढ़ना भी रुक जाता है। ऐसा उम्र बढने के कारण सेक्स हार्मोन्स का स्राव होना बंद होने के कारण होता है।

सर्जरी तथा बालों का प्रत्यारोपण इलाज की अंतिम कड़ी मानी जाती है। शुरूआती दिनों में मेडिकल ट्रीटमेंट कई बार फायदेमंद होता है। कई बार इस कारण सर्जरी की जरूरत नहीं पड़ती।

आजकल मार्केट में कई तरह के प्रोडक्ट्स उपलब्ध हैं जो पतले, रोगग्रस्त बालों में कई तरह से फायदेमंद होते हैं। कई तरह के तेल,लोशन आदि कमजोर तथा रोगग्रस्त बालों की जड़ों से मृत बालों को साफ कर देते हैं तथा नये बालों को निकलने में सहायक होते हैं। इन दवाओं को प्रयोग विशेषज्ञों की सलाह पर सावधानी पूर्वक किया जाए तो 40 फीसदी से ज्यादा फायदा होने की गुंजाइश होती है। कई बार सर्जरी की जरूरत ही नहीं पड़ती।

सर्जरी कितने प्रकार की?

गंजेपन के इलाज के लिए आजकल चिकित्सा-विज्ञान में बहुत सारे विकल्प उपलब्ध हैं। इसकी सहायता से प्राकृतिक बाल पुनः प्राप्त किये जा सकते हैं। यह बात कोई मायने नहीं रखती कि सर का कितना हिस्सा गंजा हो गया है या सर का कौन-सा हिस्सा गंजा हो गया है। पूरा सर ही गंजा हो गया है तो भी घबराने की कोई जरूरत नहीं है। छाती, पीठ या जांघ के बालों को भी प्रतिरोपण के लिए लिया जा सकता है। अतः आजकल किसी भी स्थिति में सर पर घने, काले बालों को उगाया जा सकता है।नये टेक्नीक के आने के बाल प्रतिरोपण काफी सरल और आसान हो गया है। इसमें समय की भी काफी बचत होती है।

डोनर हेयर दो भिन्न तरीके से प्राप्त किये जा सकते हैं- १. स्ट्रिप हार्वेस्टिंग तथा २. फॉलिकुलर यूनिट एक्ट्रेक्शन से।

स्ट्रिप हार्वेस्टिंग में स्थानीय त्वचा को सुन्न कर छोटे टुकड़े निकाल कर जरूरत वाले स्थान पर प्रत्यारोपित किया जाता है। जहां से त्वचा सहित बाल निकाले जाते हैं, वहां टांका लगा दिया जाता है। मरीज को ठीक होने में लगभग दो सप्ताह का समय लगता है। स्ट्रिप मेथड में आजकल आधुनिक तकनीक अपनायी जाती है और ट्राइकोफाइटिक क्लोजर द्वारा टांका लगाने पर निशान कम से कम बनता है।

फॉलिकुलर यूनिट एक्ट्रेक्शन में बालों को फॉलिकल यानी जड़ सहित निकाला जाता है। इसके लिए महज 0.6 मिमी से 1.2 मिमी का चीरा लगाया जाता है। फिर, इस टुकड़े को जरूरत वाली जगहों पर प्रत्यारोपित कर दिया जाता है। चूंकि इस प्रक्रिया में अलग-अलग फॉलिकल निकाला जाता है। इसलिए वहां छोटा दाग रह जाता है और ऑपरेशन के बाद दर्द या परेशानी कम से कम होती है। इस ऑपरेशन में टांका हटाने की जरूरत नहीं पड़ती। मरीज एक सप्ताह में ठीक हो जाता है।

इस विधि में बालों के गुच्छे को त्वचा की ऊपरी परत सहित निकाला जाता है। ऐसा सर के पिछले हिस्से जहां घने बाल होते हैं, जिसे डोनर एरिया कहा जाता है, से लिया जाता है। इन स्थानों से फॉलिकुलर यूनिट को स्टिरियो माइक्रोस्कोप की मदद से निकाला जाता है। फिर उसे उस स्थान पर ग्राफ्ट किया जाता है, जहां बाल उगाने की जरूरत होती है। इस हिस्से को रेसिपियेंट एरिया कहा जाता है। इस विधि से एक ही सत्र में अधिक से अधिक बालों को ग्राफ्ट के लिए निकाल जाता है। यदि डोनर एरिया ठीक ठाक हो तो एक बार में 5000 से भी अधिक फॉलिकुलर यूनिट को निकाला जा सकता है। जिन सेंटरों में स्टिरियो माइक्रोस्कोप की सुविधा होती है, वहां ग्राफ्ट के नष्ट होने की संभावना बहुत कम होती है। इसमें डोनर एरिया में गहरे निशान पड़ जाते हैं। इससे बचने के लिए ट्राइकोफाइटिक

क्लोजर का सहयोग लिया जाता है।

इस विधि में सिंगल फॉलिकुलर यूनिट को खोपड़ी के पिछले हिस्से से जड़ सहित निकाल कर गंजे स्थानों में ग्राफ्ट किया जाता है। इसके लिए वैसी जगहों का चुनाव किया जाता है, जहां पूरी तरह घने बाल हों। स्वस्थ तथा घने बाल नहीं होने की स्थिति में ग्राफ्ट की सफलता में संदेह होता है। ग्राफ्ट की सफलता के लिए पावर एसिस्टेड फॉलिकुलर यूनिट एक्ट्रेक्श जैसी आधुनिक तकनीक का सहारा लिया जाता है। इस विधि में अत्यंत छोटी यूनिट को सावधानीपूर्वक निकाला जाता है, ताकि ग्राफ्ट के बाद घाव किसी भी तरह की विकृति पैदा न करें।

ट्राइकोफाइटिक क्लोजर के साथ-साथ ट्रिपल लेयर क्लोजर से निशान का पता नहीं चलता। सामान्य रूप से ट्रिप मेथड को पूरी दुनिया में सबसे ज्यादा अपनाया जाता है, क्योंकि इस विधि में अधिक गंजे एरिया के लिए एक ही सत्र में ज्यादा ग्राफ्ट को प्रत्यारोपित किया जा सकता है। भारत में भी कास्मेटिक सर्जन इस विधि के आधुनिकतम रूप को ज्यादा से ज्यादा अपना रहे हैं। इस विधि से अधिक से अधिक मरीज फायदा उठा रहे हैं। इसका रिजल्ट अच्छा और कम खर्चीला होने के साथ-साथ मरीज तथा सर्जन दोनों को कम परेशानी होती है।

पहले तीन मिमी बालों का गुच्छा डोनर एरिया से निकाला जाता था। इसके लिए खोपड़ी के पिछले हिस्से का इस्तेमाल किया जाता था। क्योंकि पिछले हिस्से में घने बाल होते हैं।उसके बाद बालों के गुच्छे को गंजे स्थान में प्रतिरोपित किया जाता था।यह कार्य कई सेशन में संपन्न होता था। प्रत्येक सेशन में सर्जन बालों के सैंकड़ों गुच्छे का ग्राफ्ट कतार में करते थे। इसमें काफी समय लगता था और मरीज तथा सर्जन दोनों को काफी परेशानी होती थी। लेकिन, हाल के वर्षों में इस विधि में काफी बदलाव आया है और इनमें काफी बारीकियां भी आयी हैं तथा ग्राफ्ट के लिए छोटे-छोटे मिनी और माइक्रोग्राफ्ट का प्रयोग किया जाने लगा है। इस विधि में बालों के इन्हीं गुच्छों को छोटे-छोटे भागों में अलग किया जाता है और फिर उन्हें प्रतिरोपित किया जाता है। बालों के छोटे टुकड़ों के होने से बालों की संख्या कम हो जाने से ग्राफ्टिंग में आसानी होती है।

मिनी ग्राफ्ट में मूलतः तीन से चार मिलीमीटर का गुच्छा होता है। इसे छोटे टुकड़ों में बांटा जाता है और प्रत्येक गुच्छे में छह से सात बाल होते हैं। माइक्रोग्राफ्ट में मात्र एक से दो बाल ही होते हैं। इस तरह के ग्राफ्ट काफी जटिल होते हैं और इसमें समय भी काफी लगता है।

सामान्य रूप से सर्जन एक सेशन में विभिन्न आकार के 200 से 400 बालों के गुच्छे जड़ सहित निकालकर प्रतिरोपित करते हैं। एक सेशन में अमूमन चार से पांच घंटे का समय लगता है। प्रतिरोपित बाल कुछ माह तक सुषुप्तावस्था में रहने के बाद वृद्धि करने लगते हैं और छह से आठ माह के बाद रिजल्ट दिखने लगते हैं। दूसरे सेशन में पहले वाले ग्राफ्ट के बीच वाले खाली हिस्से में बालों का प्रत्यारोपण करते हैं।

कुछ सर्जन अपने सहायकों की बड़ी टीम लेकर एक साथ एक हजार गुच्छों को प्रतिरोपित करने की व्यवस्था करते हैं। इनमें मिनी तथा माइक्रो दोनों तरह के ग्राफ्ट शामिल होते हैं। दुर्भाग्यवश इतना करने के बावजूद इस तकनीक से ज्यादा बाल उगाने में ज्यादा सफलता नहीं मिलती। लेकिन, इस विधि में समय की काफी बचत होती है।

इस विधि में बड़े गुच्छे के साथ मिनी तथा माइक्रोग्राफ्ट मिलाकर प्रतिरोपित किया जाता है तो बाल प्राकृतिक रूप से दिखने लगते हैं। प्राकृतिक तथा ग्राफ्ट बालों में विशेष अंतर नही होता। यहां यह भी बता दें कि सभी सर्जन अपनी सुविधानुसार बाल ग्राफ्ट के लिए अपने-अपने फॉर्मूला अपनाते हैं। सर्जन के ये तरीके बाल झड़ने की प्रकृति तथा गंजेपन की स्थिति पर निर्भर करते हैं। इसमें डॉक्टर के अनुभव, दक्षता तथा कार्यकुशलता को साफ-साफ देखा जा सकता है।

यहां यह भी बताना जरूरी है कि कोई भी सर्जन किसी भी गंजे के सर पर नये बालों का निर्माण नहीं करता। बल्कि एक जगह के बालों को निकालकर दूसरी जगह पर मात्र प्रतिरोपित करता है। यहां भी डाक्टरों की एक सीमा होती है क्योंकि सभी गंजों के सर पर बाल प्रतिरोपित नहीं किये जा सकते।

डोनर एरिया की गुणवत्ता निम्न बातों पर निर्भर करती हैं -

- बालों का घनापन प्रतिवर्ग सेमी।
- बालों की मोटाई।
- बालों की प्रकृति- घुंघराले बाल अच्छे माने जाते हैं।
- गंजे एरिया से डोनर एरिया बड़ा होना चाहिए।
- मेडिकल कंट्राइंडिकेशन न हो।

प्रत्यारोपित बालों में वृद्धि सर्जरी के आठ माह के बाद अच्छी तरह

दिखाई पड़ने लगती है। बालों को पूरी तरह घना होने में एक से डेढ़ साल का समय लग जाता है। अच्छी गुणवत्ता के ट्रांसप्लांट के लिए बाल प्राकृतिक रूप से उगें न कि उसे दुबारा सर्जरी कराने की जरूरत पड़े।

सावधानियां

- सर्जरी के दो दिनों के बाद बालों में शैंपु लगाने के लिए कहा जाता है। यह ग्राफ्ट के एरिया से बालों को झड़ने से रोकता है।
- दो से तीन माह के बाद ग्राफ्ट बालों से नये बाल निकलने लगते हैं और छह से नौ माह के दौरान बाल मोटे और मजबूत होने लगते हैं।
- बाल पुराने स्थानों से झड़ते हैं।
- कुछ मरीज पुराने बालों को झड़ने से रोकने के लिए दवाइयों का प्रयोग करते हैं, जबकि दूसरे मरीज झड़नेवाली जगह पर नये प्रत्यारोपण की तैयारी करते हैं।

ग्राफ्ट को प्राप्त करने के लिए कई तरह की तकनीक अपनायी जातीं हैं। सभी की अपनी-अपनी खूबियां तथा खामियां हैं, जिस किसी भी तकनीक को अपनाया जाये, सभी का एक ही उद्देश्य होता है कि ग्राफ्ट वाले बालों को नुकसान न पहुंचे। चूंकि बाल त्वचा से सीधे नहीं निकलते, तिरछे निकलते हैं। उसी को ध्यान में रखकर उसी कोण से बालों को निकाला जाये। ऐसा करने से बालों को नुकसान होने की संभावना नहीं होती है।

डोनर की जगह से ग्राफ्ट के लिए बाल निकालने के लिए स्ट्रिप एक्सीजन हार्वेस्टिंग तकनीक का सहारा लिया जाता है। इसके लिए सिंगल, डबल या ट्रिपल ब्लेड वाले स्कालपेल का प्रयोग किया जाता है। डोनर वाली जगह पर चीरा लगाते हुए इस बात का ध्यान रखा जाता है कि बालों को किसी तरह का नुकसान न हो।टिस्सू सहित बालों को निकालने के बाद उसे छोटे-छोटे टुकड़ों में अलग कर फॉलिकुलर यूनिट को अलग किया जाता है।

फॉलिकुलर यूनिट एक्ट्रैक्शन विधि से ग्राफ्ट या तो एक ही बार में प्राप्त किया जा सकता है या फिर थोड़े-थोड़े अंतराल पर लिया जाता है। इस विधि में कितना समय लगता है, यह सर्जन के अनुभव, दक्षता तथा काबिलियत पर निर्भर करता है। इस तकनीक की खासियत यह है कि इसमें अत्यंत छोटा निशान पड़ता है और ऑपरेशन के बाद दर्द या असुविधा भी कम होती है। यह अलग बात है कि इस विधि में अधिक समय के साथ खर्च भी ज्यादा होता है।

जटिलताएं -

बाल के पतले होने को शॉक लास कहते हैं। यह सामान्य साइड इफेक्ट है जो थोड़े समय के लिए रहते हैं।

सर तथा ललाट में सूजन की भी समस्या होती है। इससे परेशानी होने पर सर्जन से संपर्क कर दवा लेनी चाहिए। यदि मरीज को सर में खुजली होने लगे तो सावधान होने की जरूरत है, उंगलियों के नाखून से ग्राफ्ट वाले स्थान पर ज्यादा नुकसान होने की संभावना होती है। इससे बचने तथा राहत पाने के लिए माश्चराइजर या मसाज शैंपु का प्रयोग करना चाहिए।

1. ग्राफ्ट की शुरुआत में बाल घने नहीं दिखते। यह समस्या दूसरे सेशन में मिनी तथा माइक्रो ग्राफ्ट के बाद स्वतः दूर हो जाती है।
2. कई बार बाल कम घने होते है और कई बार ग्राफ्ट रिजेक्ट भी हो जाते हैं। और थोड़े दिनों के बाद ही झड़ जाते है। किंतु नब्बे से पंचानवे फीसदी मामलों में समय के साथ प्रतिरोपित बाल बढ़ने लगते हैं।
3. कई बार डॉक्टर की कोशिशों के बावजूद सही दिशा में बाल नहीं उग पाते। इसकी वृद्धि विपरीत दिशा में होने लगती है। ऐसा ग्राफ्ट सही तरीके से नहीं होने तथा जड़े ढीली होने के कारण होता है।ढीले ग्राफ्ट की वजह से कई बार इस तरह की समस्या देखने को मिलती है।
4. कई बार ग्राफ्ट किये गये बाल में वृद्धि होने के बाद उसकी रचना तथा प्रकृति में काफी अंतर दिखने लगते हैं।सर के बाल तथा प्रतिरोपित बाल में अंतर दिखता है। इसकी प्रकृति तथा गुणवत्ता में परिवर्तन के सही-सही कारणों को पता नहीं चल पाता।
5. कई बार ललाट के उपर की हेयर लाईन एक सीध में समान नहीं होती। अत्यधिक पतले या जरूरत से ज्यादा घने होते हैं। कई बार ग्राफ्ट के निशान स्पष्ट रूप से दिखने लगते हैं, जो काफी कुरूप और भद्दे लगते हैं। अच्छी तकनीक का सहारा लेकर इसे दूर किया जा सकता है। शुरूआती समय में भी चीरा को इस तरह डिजाइन किया जाता है कि निशान की लाइन से ही बालों की वृद्धि हो। ऐसा होने से घने बालों के पीछे निशान छिप जाते हैं।

◆◆◆

सेवानिवृत्त चिकित्सक
केंद्रीय अस्पताल, भारत कोकिंग कोल लिमिटेड, धनबाद

आपका गुल्लक

रियलएस्टेट इंवेस्टमेंट ट्रस्ट (आर.ई.आई.टी)

- अनिरुद्ध नोनिया

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड में 'अनुवादक' के पद पर कार्यरत श्री अनिरुद्ध नोनिया, निवेश एवं निवेश संबंधी उत्पादों में गहरी रुचि रखते हैं। इनका मानना है कि एक खुशहाल जीवन के लिए आय के साथ-साथ सुनियोजित तरीके से सही एवं नियमित निवेश करते रहना भी अत्यंत आवश्यक है और इसके लिए हमें खुद को शिक्षित करते रहना चाहिए। इस विषय पर इनके कई लेख पूर्व में भी प्रकाशित हो चुके हैं। इसी कड़ी में पेश है इनकी एक और प्रस्तुति...

हम रोजाना चमकते शॉपिंग मॉलों, ऑफिस कॉम्प्लेक्सों एवं आईटी पार्कों को देखते हैं। इस तरह की प्रॉपर्टी को देखकर प्राय: हमारे मन में भी यह ख्याल आता है कि काश ! हम भी इसमें अपना निवेश कर पाते। किंतु अगले ही पल हम यह पाते हैं कि यह हमारे लिए असंभव है। जी हां, यह सच है कि रियल एस्टेट में निवेश करना मध्यम वर्ग के लिए किसी सपने जैसा ही है। लेकिन, आज के समय में हम अपने इस सपने को भी बहुत ही आसानी से पूरा कर सकते हैं।

आज हमारे पास रियल एस्टेट इंवेस्टमेंट ट्रस्ट (REIT) एक ऐसा निवेश विकल्प है, जिसके माध्यम से हम अपनी पूंजी को इन अट्टालिकाओं में निवेश करके इस पर नियमित रूप से रेंटल आय प्राप्त कर सकते हैं। रियल एस्टेट में निवेश करने का यह बेहद ही सुरक्षित तरीका है। इस प्रकार आर. ई. आई. टी. नियमित आय प्राप्त करने का तेजी से उभरता हुआ एक लोकप्रिय निवेश विकल्प है। विदेशों में लोग सेवानिवृत्ति के बाद सुरक्षित एवं नियमित आय प्राप्त करने के लिए इसमें निवेश करते हैं। यह रियल एस्टेट क्षेत्र में

निवेश करने का एक शानदार तरीका है क्योंकि वे स्टॉक एक्सचेंजों में सूचीबद्ध हैं।

म्यूचुअल फंड की तर्ज पर संरचित आर. ई. आई. टी. की शुरुआत पहली बार संयुक्त राज्य अमेरिका में वर्ष 1960 के दशक में हुई थी। भारत में सिक्योरिटीज एंड एक्सचेंज बोर्ड ऑफ इंडिया (सेबी) द्वारा इसे पहली बार वर्ष 2007 में पेश किया गया। इस क्षेत्र में माइंडस्पेस आर. ई. आई. टी., ब्रुकफील्ड आर. ई. आई. टी. एवं एम्बेसी आर. ई. आई. टी. जैसी कंपनियां प्रमुख हैं, जिनकी परिसंपत्तियां पूरे भारत में फैली हुई हैं।

भारतीय रियल एस्टेट क्षेत्र पिछले एक दशक से समझदार निवेशकों के लिए आकर्षण का केंद्र रहा है, लेकिन यह भी सच है कि यह अनिश्चितताओं से भरा रहा है। क्योंकि, हम पाते है कि यदि हम निवेश के लिहाज से कोई जमीन या इमारत खरीदते हैं तो इसमें काफी बातों का ध्यान रखना पड़ता है, जैसे उसकी सुरक्षा, जालसाजी, पूंजी की तरलता और जरूरत पड़ने पर इसे आसानी से बेच पाना प्रमुख है।

जैसा कि नाम से ही प्रतीत होता है, इसमें निवेशकों के पैसे का प्रबंधन एक ट्रस्ट द्वारा किया जाता है। ट्रस्टी बोर्ड के पास देश भर में फैली ऐसी बड़ी-बड़ी परिसंपत्तियां होती हैं, जिसे गूगल, फेसबुक, अमेजन, फ्लिपकार्ट आदि जैसी बड़ी एवं विश्वसनीय कंपनियों को पट्टे पर दिया गया होता है। इन परिसंपत्तियों से प्राप्त किराये को यूनिट धारकों के बीच आय और लाभांश के रूप में वितरित किया जाता है।

म्यूचुअल फंड में जहां शेयर, बॉन्ड और अन्य प्रतिभूतियों में पैसे का निवेश किया जाता है, वहीं आर. ई. आई. टी. में पैसे का निवेश कॉमर्शियल रियल एस्टेट में किया जाता है। प्रॉपर्टी से होने वाले कैश फ्लो / रेंटल इनकम में आरईआईटी के निवेशक हिस्सेदार होते हैं। स्कीम के तहत जितनी यूनिटें उनके पास होती हैं, उनकी कमाई उसी अनुपात में होती है।

इसकी शुरूआत निवेशकों को एक ऐसा मंच प्रदान करने के लिए की गयी है, जिसके माध्यम से रियल एस्टेट में सुरक्षित एवं लाभकारी निवेश किया जा सके। इसमें बड़े एवं छोटे, सभी प्रकार के निवेशक निवेश कर सकते हैं। ₹ 50,000/- की न्यूनतम राशि के साथ निवेश की शुरूआत की जा सकती है।

आर. ई. आई. टी. प्लेटफॉर्म, सिक्योरिटीज एंड एक्सचेंज बोर्ड ऑफ इंडिया (सेबी) और म्यूचुअल फंड्स द्वारा अनुमोदित है। आर. ई. आई. टी. के ट्रस्टी बोर्ड के कर्तव्यों को भी सेबी द्वारा परिभाषित किया गया है, जिसके तहत ट्रस्टी बोर्ड की यह जिम्मेदारी होती है कि वह सभी लागू कानूनों का अनुपालन सुनिश्चित करें और निवेशकों के अधिकारों की रक्षा करें।

निवेशकों से प्राप्त पूंजी को सीधे आवासीय इकाइयों, होटलों, शॉपिंग सेंटरों, गोदामों, डेटा केंद्रों, बुनियादी ढांचों, स्वास्थ्य देखभाल इकाइयों, अपार्टमेंट परिसरों आदि जैसी परिसंपत्तियों में निवेश किया जाता है। निवेशकों को इन परिसंपत्तियों से रेंट प्राप्त करने और किसी कानूनी विवाद से निपटने की चिंता नहीं होती है, क्योंकि यह दायित्व भी रियल एस्टेट इंवेस्टमेंट ट्रस्ट (आर. ई. आई. टी.) का होता है।

इसका विकास सरकार द्वारा 'रियल एस्टेट विनियमन विधेयक' पारित करने से हुआ। यह विधेयक रियल एस्टेट डेवलपमेंट फंड में निवेश करने वाले निवेशकों के अधिकारों को सुनिश्चित करता है। सरकार द्वारा आर. ई. आई. टी. फंड से जुड़े डिविडेंड डिस्ट्रीब्यूशन टैक्स यानी डी.डी.टी. को भी हटा लिया गया है, जो रियल एस्टेट इन्वेस्टमेंट ट्रस्ट के कार्यान्वयन में एक बाधा थी।

ऐसे समय में जब अर्थव्यवस्था फल-फूल रही है, और सरकार बुनियादी ढांचों एवं अचल परिसंपत्तियों के विकास पर अधिक जोर दे रही है, रियल एस्टेट इंवेस्टमेंट ट्रस्ट (आर. ई. आई. टी.), निवेशकों के लिए एक लाभकारी निवेश विकल्प है।

◆ ◆ ◆

अनुवादक, राजभाषा विभाग
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

काव्यकुंज

मरा नहीं है रावण

- राजपाल यादव

मरा नहीं है रावण अब भी ज़िंदा है शैतानों में
माँ बहनो को हरने ख़ातिर फिरता है मैदानो में

न जाने कब आ पहुँचेगा धर साधु का भेष बली
किस पर नज़र गड़ायेगा ले जाने को परदेश खली
अट्टहास करता फिरता है गली चौक खलिहानों में
मरा नहीं है रावण अब भी ज़िंदा है शैतानो में !

कभी पहनता खादी ख़ाकी कभी मौलवी संत बने
कभी सियासी चालें चलता कभी शेख़ हनुमंत बने
छुप कर बैठा है वो बैरी कुछ ज़िंदा इंसानो में
मरा नहीं है रावण अब भी ज़िंदा है शैतानो में !

चाहते हो ग़र वध रावण का मन के रावण को मारो
पहले खुद को राम बनाओ फिर रावण का सर तारो
स्वयं दशानन मर जाएगा पहुँच निकट शमशानों में
मरा नहीं है रावण अब भी ज़िंदा है शैतानों में !
माँ बहनो को हरने ख़ातिर फिरता है मैदानों में !!

विश्व हिंदी सचिवालय, न्यू मीडिया सृजन संसार ग्लोबल फाउंडेशन तथा सृजन आस्ट्रेलिया अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका द्वारा अटल बिहारी वाजपेयी जी के जन्म दिवस पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय अटल काव्य प्रतियोगिता के अंतर्गत चयनित श्रेष्ठ इक्यावन रचनाओं में चयनित और तत्पश्चात प्रकाशित 'श्रेष्ठ इक्यावन कविताएँ' काव्य संग्रह में संकलित।

पूर्व महाप्रबंधक (कार्मिक)/ राजभाषा
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

काव्यकुंज

यादों के भंवर में

- विजय कुमार

यादों के भंवर में
जब मैं डूबा चला जाता हूँ
वो पुरानी यादें
सहसा ताजी हो जाती हैं

वो कार्यालय की बनावट
पास की कॉलोनियों की सजावट
वो डम्फर का चलना
काम के दौरान, आपस में भिड़ना
वो वाईडिंग इंजन का छुक-छुक कर चलना
रह-रह कर टिपलर में बोझाई का पटकना

वो रात्रि पाली का
दिन पाली से मिलना
वो चाय की चुस्की
आपस की मस्ती
वो मिलकर त्योहार मनाना
दुःख में साथ निभाना

वो प्रमोशन की बधाई
आपस में मिठाई
वो होली का आना
अधिकारी-कर्मचारी का भेद भुलाकर -
रंग गुलाल से सराबोर हो जाना
दूसरे ही पल होश आते ही
मन का उदास हो जाना
पुनःजी करता है
यादों के भंवर में डूबा रह जाऊँ

लिपिक,
दोबारी कोलियरी, बस्ताकोला क्षेत्र

जीवन का रंगमंच

- राकेश श्रीवास्तव

पास आती गोधूलि बेला
याद कराती, मैं अकेला
पथिक बन खूब चला मैं
रंगमंच में यूँ ढला मैं
सारे किरदार हैं निभाए
देख काल भी मुस्काये
रिश्तों में यूँ बंधा मैं
चंदन साथ जला मैं
अब समय न जाने दूंगा
रंगमंच को न आने दूंगा
चिर शांति को मैं अकेला
चला बनने गोधूलि बेला

वरिष्ठ सर्वेक्षक
केन्द्रीय सर्वेक्षण विभाग
कोयला भवन मुख्यालय

काव्यकुंज

तबादला

- ब्रजेश कुमार पंत

बीसीसीएल मुख्यालय के दूसरे तल्ले पर
एसी कमरे में वीआईपी कुर्सी के गद्दे पर
जब मैंने अपने एक मित्र को बड़ी शांति से
कम्प्यूटर पर टाइपिंग में मशगूल देखा,
तो मेरे लालची मन में एक अरमान जागा
तुरत अपने आप पर एक सवाल दागा ।
बेटे !कबतक कोयला उत्पादन के लक्ष्य को
महाभारत के अर्जुन की तरह देखते रहोगे ?

कभी भू-धसान, कभी विस्थापन
कभी आग, कभी जलप्लावन
कभी विस्फोट, कभी बड़ी दुर्घटना
कभी हड़ताल, कभी छिटपुट घटनाएं
कभी थाने का नंबर, कभी कोर्ट का चक्कर
कभी छुट्टी की किचकिच, कभी नेता का लश्कर
बज गयी सिनेमा हॉल में फोन की घंटी
समझ लो हो गयी घरवाली से कट्टी

कब तक इन सारे झंझावातों से आशिकी करते-करते
अपने जीवन को उलझे धागे सा बनाओगे,
राज-ए-उल्फत को दबाकर जीना अच्छा नहीं
आज तुम आपबीती सुनाओगे-सुनाओगे- सुनाओगे।

सच है प्रकृति की चित्रपटी परिवर्तन का पर्याय है,
आगे सुनिए - मेरे तबादले का मजेदार अध्याय है

मेरा एक मित्र है, स्वभाव से विचित्र है
समझिये बीसीसीएल सूचनातंत्र का विश्वामित्र है।
बोला-सतर्कता विभाग में तुम जगह पा जाओगे
यदि जल्दी से अपनी अर्जी मुख्यालय भेज पाओगे।
पहले भी तुमने कई असफल दांव आजमाए हैं,
अर्जी दी ,साक्षात्कार हुआ और चयन की चिट्ठी आ गयी
महाप्रबंधक ने कहा- इस क्षेत्र को तुम्हारी जरूरत है भाई।
निराशा के घनघोर तिमिर के बीच
आशा के एक जलते दीपक ने
मुझे मुख्यालय जाने की अनुमति दे दी
पहली बार, बिना किचकिच होली की छुट्टी ससुराल में
बिताई
पर लौटते ही पूरी दुनिया कोरोना महामारी की चपेट में आयी
हजारों लोग रोज मरने लगे
हम एक दूसरे से मिलने में डरने लगे।
वीरान शहर- सुनसान गली
मास्क पहनो, हाथ धोने की हवा चली ।

कोई कहता प्रकृति के साथ अन्याय हुआ है
इसीलिए मानव जीवन आज बेहाल हुआ है ।
पर्यावरण और पशु-पक्षी के अच्छे दिन आए हैं
पूरी धरा के वैद्य इसे रोकने की अक्षमता पर शर्माए हैं ।
धीरे- धीरे वर्षा ऋतु भी आ गयी,
कोरोना के साथ जलप्रलय भी रौद्र रूप में छा गयी।

पहली बार मुझे मॉनसून की घबराहट नहीं थी
परन्तु सतर्कता विभाग की ड्यूटी बड़ी कड़ी थी।
भले ही घर से दफ्तर और दफ्तर से घर का चक्कर है,
लेकिन सत्य उजागर करने की जिम्मेदारी सबसे बढ़कर है।
यूं तो अपनी दिनचर्या और रिश्ते- नाते में सुलझा हुआ हूँ,
परन्तु, क्या खोया-क्या पाया की पहेली में उलझा हुआ हूँ ।

मुख्य प्रबंधक (खनन)
सतर्कता विभाग, भा.को.को.लि

आध्यात्मिक चर्चा

ईश्वरलाभ ही मानव जीवन का उद्देश्य है

- बिकेश कुमार सिंह

मानव जीवन हम लोगों के लिए ईश्वर का सर्वोत्तम उपहार है। सनातन धर्म के अनुसार 84 लाख योनियों के चक्कर काटने के बाद यह मानव शरीर मिलता है जो देवताओं के लिए भी दुर्लभ है। उन्हें भी मुक्ति पाने के लिए मानव शरीर को ही धारण करना होता है। इसीलिए मनुष्य जन्म प्राप्त करने के बाद हमारा उद्देश्य ईश्वर लाभ करना ही है। आदि गुरू शंकराचार्य कहते है कि यह मनुष्य जन्म बहुत ही दुर्लभ है, यह कदापि भोग के लिए नहीं है बल्कि ईश्वर लाभ करने के लिए मिला है जो कि इस जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य है। ताकि हम सब जन्म-जन्मांतर के चक्कर से सदा-सदा के लिए मुक्ति पा सकें। अब प्रश्न उठता है कि हम ईश्वर के राज्य में जाएं कैसे? इसके चार आयाम है -ज्ञान, भक्ति , योग और कर्म।

ज्ञान क्या है - ईश्वर नित्य है और जगत अनित्य है। इस बात की धारणा हमें अपने जीवन में करनी होगी। और सही गलत का भेद करते हुए हमें निरंतर अपने जीवन के उदेश्य की ओर बढ़ते रहना होगा।

भक्ति - शरणागति को ही भक्ति कहते हैं। हमें दास भाव का अवलंबन करते हुए पूर्ण रूप से ईश्वर के प्रति शरणागत होना होगा। हे प्रभु! इस जगत में मेरा कुछ भी नहीं है, घर-परिवार, माता-पिता, पद, मान-मर्यादा सब आपकी कृपा से प्राप्त हुआ है। मेरा सारा काम आप कर रहे हैं और मेरा नाम हो रहा है। हनुमान जी का जिस तरह का दास भाव था। एकमात्र भगवान श्री रामचंद्र जी पर ही आश्रित थे। वह राम को छोड़कर दूसरा कुछ जानते ही नहीं थे। जिसके चलते उनका पूरा जीवन ही राममय हो गया था। हनुमान जी दास भक्ति के सबसे बड़े उदाहरणों में से एक माने जाते हैं। हनुमान जी से शिक्षा लेते हुए हमें भी अपने जीवन में दास भाव और शरणागती का अवलंबन करना होगा ताकि प्रभु की कृपा हम पर भी बनी रहे और पल भर के लिए भी हम अपने लक्ष्य से विस्मृत न हो पाएं।

योग - योग का मतलब होता है आत्मा के साथ परमात्मा का योग कराना। हमें अपने जीवन में सम्यकभाव, सम्यक दृष्टिकोण रखना होगा, स्थितप्रज्ञ (सुख -दुःख में समभाव) बनना होगा। इन मानवीय गुणों के सहारे हम निरंतर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते जाएंगे जो कि मानव जीवन का चरम लक्ष्य है।जिसकी व्याख्या योगेश्वर कृष्ण ने भगवद् गीता में विस्तार से की है।

कर्म- कर्म ही पूजा है। हम एक पल भी बिना कर्म के नहीं रह सकते और ये कर्म ही है जो हमें सांसारिक बंधनों में बांधता है और बंधनो से मुक्त भी करता है। स्वामी विवेकानंद जी कहते हैं, "Unselfishness is God" निस्वार्थता ही ईश्वर है। अब यहाँ पर यह बात बिल्कुल स्पष्ट हो जाती है कि जो कर्म हम अपने स्वार्थ के लिए करते हैं वो हमें बंधनो में बांधते हैं तथा निस्वार्थ भाव से किया गया प्रत्येक कर्म हमें ईश्वर की ओर ले जाता है। जो कि मानव जीवन का चरम लक्ष्य है। हमें अपने अभीष्ट आदर्श को पाने के लिए हर पल सजग रहना होगा। जो भी चीज हमें मानसिक, शारीरिक या आध्यात्मिक दुर्बलता पहुंचाएं उसका तत्काल त्याग कर देना चाहिए। सत्य के मार्ग का अवलंबन करना चाहिए, क्योंकि सत्य बलप्रद है, पवित्रता स्वरूप है। सत्य वह है जो हमें शक्ति प्रदान करता है। यह यथार्थ सत्य है कि यह दुर्लभ मानव जन्म हमें बार-बार नहीं मिलने वाला। यहाँ पर स्वामी विवेकानंद जी बहुत ही सुन्दर बात कहते हैं कि, "हीरों की खान छोड़कर काँच के टुकड़ों के पीछे मत दौड़ो।" यह मानव जीवन एक अमूल्य सुयोग है। क्या सांसारिक सुखों के खोज में लगे हुए हो? प्रभु ही समस्त सुखों के स्रोत हैं। उस उच्चतम को खोजो, उसी को अपना लक्ष्य बनाओ और तुम अवश्य उसे प्राप्त करोगे। स्वामी जी कहते हैं, "Whatever you think you'll be" जो कुछ तुम सोचोगे बन जाओगे। इसलिए हम अपने जीवन में सकारात्मक भावों को ही ग्रहण करें और सकारात्मक विचारों का ही प्रसार करें। नकारात्मक विचारों से बिल्कुल दूरी बना कर रखनी है और परनिन्दा से भी कोसों दूर रहना है।क्योंकि किसी की निंदा करके हम उसका कुछ लाभ तो नहीं कर सकते बल्कि उसका ओर अपना दोनों का बुरा ही करते हैं। हमें गुणग्राही बनना है। आध्यात्मिक विचारों के प्रसार से ही मानव जाति की सबसे अधिक सहायता की जा सकती है।

आइए ! आज से हमलोग संकल्प लें कि अपने मनुष्य जन्म को सार्थक करें और ज्ञान , भक्ति, योग तथा कर्म के समन्वय से ईश्वर के राज्य में प्रवेश करें। ईश्वर लाभ करके अपने मानव-जीवन को धन्य करें।

◆◆◆

लिपिक
सी ए डब्लू (CAW) बीसीसीएल , धनबाद

हिंदी और हिंदी दिवस

- विनोद प्रकाश मीणा

हमारा देश प्रति वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाता है। हिंदी हमारे देश की राष्ट्रभाषा है। 14 सितंबर सन् 1949 को भारतीय संविधान द्वारा हिंदी को भारत की राजभाषा के रूप में अपनाया गया। इसी ऐतिहासिक फैसले को हर क्षेत्र में प्रचारित करने के लिए भारत की राष्ट्रभाषा प्रचार समिति ने 1953 से हर साल 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाने का फैसला किया। जो कि भारत में हर राज्य और हर वर्ग तक हिंदी भाषा के प्रचार और प्रसार के लिए इस दिन को चुना गया।

भारत में हर साल 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। इस दिन विद्यालयों, सरकारी संस्थानों तथा अन्य जगहों पर हिंदी दिवस के अवसर पर कार्यक्रम होते हैं जैसे निबंध लेखन, वाद विवाद और हिंदी विचार विमर्श किया जाता है।

एक दावे के अनुसार हिंदी भाषा पूरे विश्व में सबसे ज्यादा बोलने में चौथे नंबर पर आती है। लेकिन उसे अच्छी तरह से समझना, पढ़ना तथा लिखना यह बहुत कम संख्या में लोग जानते हैं। आज के समय में हिंदी भाषा के उपर आंग्ल भाषा के शब्दों का ज्यादा असर पड़ा है। आज के समय में अंग्रेजी भाषा ने अपनी जड़ें ज्यादा घेर ली है जिससे हिंदी भाषा का भविष्य खतरे में नजर आता है। जो लोग इस हिंदी भाषा में ज्ञान रखते हैं उन्हें हिंदी के प्रति अपनी जिम्मेदारी का बोध करवाने के लिए इस दिन को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। जिससे वे सभी अपनी कर्तव्यों का सही पालन करके हिंदी भाषा के गिरते हुए स्तर को बचा सकें। लेकिन समाज और सरकार इसके प्रति जिम्मेदार नहीं दिखती है। हालात ऐसे आ गए हैं कि हिंदी दिवस को भी ईद और दीपावली की तरह मनाना पड़ रहा है।

इसमें हमारी गलती नहीं है हमने हमारी आदत बना ली है दुसरों की नकल करने की। अगर आज कहीं सभा या सम्मेलन में हिंदी में बोलते हैं तो ऐसा लगता है कि जैसे वहां पर सबसे कम पढ़ा-लिखा वही है जो हिंदी में बोल रहा है। आज कल के बच्चों को तो हिंदी बोलने में भी शर्म आती है। क्यों आती है शर्म? क्यों आती है? इसके लिए जिम्मेदार विद्यालय, माता-पिता या आस-पास का वातावरण है? ऐसे कई सवाल आज हिंदी भाषा के लिए खड़े हो गए हैं। इसका पहला कारण है हमारी अपनी सोच। हमलोग सोचते हैं कि आगे का भविष्य सिर्फ आंग्ल भाषा पर ही निर्भर है, क्यों है? अगर समय रहते हमने ही ध्यान दिया होता तो आज ये दिन नहीं देखना पड़ता। आज के समय में हमारी सुबह ही आंग्ल भाषा के साथ ही शुरू होती है। हम खुद अपने बच्चों को सुप्रभात की जगह गुड मोर्निंग बोलते हैं। जब दिन की शुरूआत ही अंग्रेजी भाषा से ही और उन्हीं बच्चों को बोलते हैं हिंदी सीखो। आज हमने हमारी बोलचाल की भाषा भी आंग्ल भाषा बना लिया है। जैसे- डिनर, गुड मोर्निंग, गुड नाईट, हैंडवाश आदि शब्दों का प्रयोग हम दिनभर करते हैं। न चाहते हुए भी ये शब्द हमारी जबान पर आ ही जाते हैं। हम अपने बच्चों से हिंदी में बात नहीं करते फिर उन्हीं बच्चों को हिंदी बचाने के लिए बोलते हैं। दिनभर दूरभाष यंत्र पर हाय, हैलो आदि शब्द एक दिन में 100 से ज्यादा बार बोलते हैं। हिंदी लेखकों और हिंदी के जानकारों का कहना है कि अब हिंदी दिवस एक सरकारी कार्य की तरह रह गया है। साल में एक दिन के लिए हिंदी याद आती है। एक दिन के आयोजन में हिंदी हमें भाषा का विकास नहीं हो सकता। हमारे समाज में कई ऐसे लोग है जो हिंदी दिवस पर भी स्वागत की जगह बेलकम का प्रयोग करते हैं जो कि हिंदी का अपमान करने के बराबर है।

दोस्तों हिंदी हमारे देश की राष्ट्रभाषा है जिसपर हमें गर्व होना चाहिए कि हम हिंदी भाषी हैं। हमें देश की राजभाषा का सम्मान करना चाहिए। हमारे देश में सभी धर्मों के लोग रहते हैं उनके खान-पान, रहन-सहन और वेशभूषा अलग-अलग है पर एक हिंदी हीं है जो सभी धर्मों के लोगों को एकता में जोड़ती है। हिंदी हमारे देश की धरोहर है जिस तरह हम तिरंगे को सम्मान देते हैं उसी प्रकार राजभाषा को भी सम्मान देना चाहिए।

"हिंदी है हम वतन है हिंदोस्तां हमारा"

◆◆◆

कनिष्ठ टेक्नीशियन, ईसीजी
कुस्तौर क्षेत्रीय चिकित्सालय, पी.बी. क्षेत्र

बीसीसीएल में राजभाषा पखवाड़ा का शुभारम्भ

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड में दिनांक 14 सितंबर, 2021 को राजभाषा पखवाड़ा-2021 का उद्घाटन सह हिंदी दिवस समारोह आयोजित किया गया। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता करते हुए निदेशक (कार्मिक) श्री पीवीकेआर मल्लिकार्जुन राव ने कहा कि हमें हिंदी को अधिक से अधिक अपनी दिनचर्या में शामिल करने की जरूरत है। हम हिंदी को बढ़ावा देने के लिए पूर्ण निष्ठा और प्रतिबद्धता के साथ आगे बढेंगे, तभी गृह मंत्रालय द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त कर सकेंगे। निदेशक (कार्मिक) महोदय ने हिंदी दिवस एवं राजभाषा पखवाड़ा के उद्घाटन समारोह के दौरान उपस्थित जन समूह को राजभाषा की प्रतिज्ञा भी दिलायी।इस अवसर पर मुख्य सतर्कता अधिकारी ने अपने संबोधन में कहा कि देश में हिंदी ही संवाद के लिए सबसे उपयुक्त भाषा है।

कार्यक्रम के आरंभ में राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त की तस्वीर पर माल्यार्पण किया गया और उनकी रचनाओं का पाठ भी किया गया। 15 दिनों तक चलने वाले पखवाड़ा में कंपनी मुख्यालय और विभिन्न क्षेत्रों में अनेक हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। राजभाषा पखवाड़ा के प्रमुख आयोजन इस प्रकार हैं:-

1. 14.09.2021 राजभाषा पखवाड़ा उद्घाटन एवं हिंदी दिवस समारोह
2. 15.09.2021 हिंदी अनुवाद एवं शब्दावली प्रतियोगिता (हिंदीतर भाषी अधिकारी/कर्मचारी)
3. 16.09.2021 हिंदी अनुवाद एवं शब्दावली प्रतियोगिता (हिंदी भाषी अधिकारी/कर्मचारी)
4. 18.09.2021 हिंदी वर्गपहेली प्रतियोगिता (अधिकारी/कर्मचारी)
5. 20.09.2021 हिंदी ज्ञान प्रतियोगिता (कक्षा 6 से 10 तक छात्र-छात्राएं)
6. 21.09.2021 राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता (बीसीसीएल के सभी अधिकारी/कर्मचारी)
7. 22.09.2021 हिंदी स्वरचित काव्यपाठ प्रतियोगिता (बीसीसीएल के सभी अधिकारी/कर्मचारी)
8. 23.09.2021 हिंदी निबंध प्रतियोगिता (अधिकारियों / कर्मचारियों की गृहणियां)
9. 28.09.2021 समापन सह पुरस्कार वितरण समारोह

राजभाषा पखवाड़े के दौरान प्रत्येक दिन किसी न किसी प्रसिद्ध हिंदी साहित्यकार अथवा हिंदी सेवी को श्रद्धांजलि दी जाती है। इस दौरान आयोजित उपर्युक्त प्रतियोगिताओं में कंपनी के सैकड़ो अधिकारियों/ कर्मचारियों के अलावा धनबाद के कई स्कूलों के लगभग १००० से अधिक छात्र-छात्राओं ने भी ऑनलाइन भाग लिया।

संपूर्ण आयोजन महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री संतोष नारायण सिन्हा के दिशा निर्देशन में राजभाषा विभाग के अधिकारी श्री दिलीप कुमार सिंह, प्रबंधक एवं श्री उदयवीर सिंह, उप प्रबंधक के साथ संपूर्ण विभाग की टीम और अन्य विभागों के हिंदी संवर्ग के कर्मचारियों के सतत सहयोग से सफलता पूर्वक किया गया।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड की कॉरपोरेट स्तरीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही समीक्षा बैठक दिनांक 03 अगस्त, 2021 को निदेशक (कार्मिक) श्री पी वी के आर मल्लिकार्जुन राव की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में निर्णय लिया गया कि आगामी सितंबर, 2021 माह में दिनांक 01-15 सितंबर के दौरान राजभाषा पखवाड़ा का आयोजन किया जाएगा और इस अवसर पर बीसीसीएल कर्मियों के साथ ही उनके आश्रितों के लिए भी विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा। इस अवसर पर सर्वश्रेष्ठ

राजभाषा कार्यान्वयन के लिए लोदना क्षेत्र और मुख्यालय स्थित जनसंपर्क विभाग को चल वैजयंती राजभाषा शील्ड प्रदान की गयी।

बैठक में महाप्रबंधक (कार्मिक एवं राजभाषा) श्री एस एन सिन्हा ने स्वागत वक्तव्य दिया, संचालन श्री दिलीप कुमार सिंह, उप प्रबंधक (राजभाषा) और अनुवर्ती कार्रवाई रिपोर्ट श्री उदयवीर सिंह, उप प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा प्रस्तुत की गयी। बैठक में सभी क्षेत्रों के क्षेत्रीय कार्मिक प्रबंधक, मुख्यालय स्थित विभागों के विभागाध्यक्ष और सभी नोडल हिंदी अधिकारी उपस्थित रहे।

मातृभाषा दिवस का आयोजन

मातृभाषा दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 21 फरवरी, 2021 को भारत कोकिंग कोल लिमिटेड सामुदायिक भवन, कोयला नगर में एक विभागीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पी एम प्रसाद ने दीप प्रज्ज्वलन करते हुए कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस अवसर पर कंपनी की गृह पत्रिका 'कोयला भारती' के अंक-34 और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, धनबाद की पत्रिका 'धनबाद राजभाषा संदेश' के अंक-18 का विमोचन भी किया गया।

कवि सम्मेलन का संचालन कवि श्री अनंत महेंद्र द्वारा किया गया। डॉ. संगीता नाथ ने"रंगों में मोहब्बत के खिलते रहे फूल" कविता प्रस्तुत की। बीसीसीएल के विभिन्न विभागों/ क्षेत्रों में कार्यरत कवियों श्री पंकज दुबे, श्री कृष्ण देव यादव, श्री आशीष पण्डिया, श्रीमती तारा देवी, श्री तुषार कश्यप, श्री संजीव कुमार आदि ने काव्यपाठ किया। श्री तेजविन्दर सिंह ने इस अवसर पर पंजाबी भाषा में काव्य पाठ किया। इस अवसर पर कंपनी के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक के अलावा सभी निदेशक, मुख्य सतर्कता

अधिकारी, विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष / महाप्रबंधकों के साथ 250 से अधिक श्रोता उपस्थित रहे।

हिंदी में बोलकर टाइप करने का प्रशिक्षण

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड मुख्यालय में दिनांक 05 जुलाई 2021 को हिंदी वॉइस टाइपिंग का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इस दौरान राजभाषा विभाग के माध्यम से सभी विभागों को हेडफोन-सह-माइक प्रदान किये गये। वॉइस टाइपिंग गूगल व माइक्रोसॉफ्ट द्वारा उपलब्ध करायी जाने वाली एक ऐसी वॉइस रिकॉग्निशन तकनीकी है जिसके माध्यम से हम किसी भी भाषा में केवल बोलकर टाइपिंग कर सकते हैं। भारत कोकिंग कोल लिमिटेड में समय समय पर हिंदी और तकनीकी से संबंधित कार्यशालाएं आयोजित की जाती रहती हैं। इसी कड़ी के अंतर्गत वर्तमान तिमाही में हिंदी वॉइस टाइपिंग का प्रशिक्षण प्रदान किया गया।श्री दिलीप कुमार सिंह, उप प्रबंधक (राजभाषा) और श्री उदयवीर सिंह, उप प्रबंधक (राजभाषा) ने उपस्थित अधिकारियों व कर्मचारियों को कम्प्यूटर और मोबाइल पर बोलकर टाइप करने का प्रशिक्षण प्रदान किया। कार्यशाला में कोयला भवन स्थित सभी विभागों के 55 प्रतिभागियों द्वारा प्रतिभागिता की गयी। अंतिम सत्र में प्रतिभागियों को उपलब्ध कराए गए हेडफोन -सह- माइक की मदद से हिंदी वॉइस टाइपिंग का भी अभ्यास कराया गया।

नराकास धनबाद की छमाही बैठक आयोजित

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की छमाही बैठक का आयोजन दिनांक 05 अगस्त, 2021 को अध्यक्ष कार्यालय बीसीसीएल के निदेशक कार्मिक श्री पी वी के आर मल्लिकार्जुन राव की अध्यक्षता में गूगल मीट के माध्यम से किया गया। बैठक में प्रेक्षक के तौर पर श्री निर्मल कुमार दुबे, कार्यालय प्रमुख, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय कोलकाता उपस्थित रहे। इस अवसर पर समिति की छमाही पत्रिका 'धनबाद राजभाषा संदेश' के अंक-19 का विमोचन भी किया गया। बैठक में निर्णय लिया गया कि अक्टूबर, 2021 माह में समिति की ओर से सदस्य कार्यालयों के लिए विभिन्न राजभाषा प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा और विजयी प्रतिभागियों को आगामी बैठक के अवसर पर पुरस्कृत किया जाएगा। नवंबर माह में आगामी बैठक के अवसर पर सदस्य कार्यालयों को भी तीन श्रेणियों (कार्यालय, उपक्रम और बैंक) में वार्षिक पुरस्कार प्रदान करने का भी निर्णय लिया गया। बैठक के दौरान जुलाई माह में आयोजित हिंदी निबंध प्रतियोगिता के विजयी प्रतिभागियों के नामों की भी घोषणा की गयी। हिंदी निबंध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान श्री रविरंजन, सीआईएसएफ को प्राप्त हुआ।

राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस का आयोजन

प्रसिद्ध चिकित्सक और पश्चिम बंगाल के पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. बिधान चंद्र रॉय के सम्मान में उनके जन्मदिन को भारत में चिकित्सा दिवस के रूप में मनाया जाता है। भारत कोकिंग कोल लिमिटेड मुख्यालय में दिनांक 01 जुलाई 2021 को चिकित्सा दिवस मनाया गया। कार्यक्रम के आरंभ में निदेशक (वित्त) श्री समीरन दत्ता, निदेशक (कार्मिक) श्री पी.वी.के.आर. मल्लिकार्जुन राव और मुख्य सतर्कता पदाधिकारी श्री कुमार अनिमेष के साथ ही उपस्थित चिकित्सकों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित किया गया। तत्पश्चात, कोराना महामारी में ड्यूटी के दौरान अपने प्राण गवाने वाले डॉक्टरों के लिए दो मिनट का मौन रखा गया। इस अवसर पर निदेशक (कार्मिक), निदेशक (वित्त) तथा मुख्य सतर्कता पदाधिकारी ने सभी चिकित्सकों की मुक्तकंठ से प्रशंसा की और कहा कि चिकित्सकों को भगवान का दूसरा रूप कहा जाता है और वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों में हमने दैवीय रूप देखा भी है। कार्यक्रम में कंपनी के सभी वरिष्ठ और कनिष्ठ चिकित्सक उपस्थित रहे।

अंतर्राष्ट्रीय नर्स दिवस का आयोजन

आधुनिक नर्सिंग की संस्थापक फ्लोरेंस नाइटिंगेल की जयंती को 'अंतर्राष्ट्रीय नर्स दिवस' के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर दिनांक 12.05.2021 को बीसीसीएल केंद्रीय अस्पताल धनबाद में अंतर्राष्ट्रीय नर्स दिवस-2021 मनाया गया। यह आयोजन उन नर्सों के सम्मान में था जो कोविड-19 की शुरुआत से ही इसके खिलाफ लड़ाई में अग्रिम पंक्ति में डटी रहीं और विपरीत परिस्थितियों में भी निरंतर अपनी करुणामयी सेवा और देखभाल करते हुए सभी चुनौतियों पर विजय प्राप्त करने में सफल रहीं।

कार्यक्रम के आरंभ में फ्लोरेंस नाइटिंगेल को पुष्पांजलि अर्पित की गयी और इसके बाद मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. आर. के. ठाकुर द्वारा स्वागत वक्तव्य दिया गया। इस अवसर पर निदेशक (कार्मिक) श्री पी.वी.के.आर. मल्लिकार्जुन राव ने केंद्रीय अस्पताल धनबाद की नर्सों एवं पैरामेडिकल स्टाफ को सम्मानित किया। निदेशक कार्मिक ने अपने संबोधन में कहा कि कोविड-19 से निपटने और वायरस के फैलाव को रोकने की लड़ाई में स्वास्थ्य कर्मियों ने निस्वार्थ भाव से मानवता की सेवा की है। उन्होने संकट के इस समय में चिकित्सा कर्मियों एवं नर्सों के योगदान और निरंतर प्रयासों के लिए कंपनी की संपूर्ण चिकित्सा टीम का आभार व्यक्त किया।

फ्रंटलाईन स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं का अभिनंदन समारोह

केंद्रीय चिकित्सालय धनबाद में दिनांक 02.07.2021 को निदेशक (कार्मिक) श्री पी वी के आर मल्लिकार्जुन राव की अध्यक्षता में फ्रंटलाईन स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के लिए एक अभिनंदन समारोह का आयोजन कर आभार व्यक्त किया गया। इस अवसर पर बोलते हुए निदेशक कार्मिक महोदय ने कहा कि कोविड-19 महामारी के दौरान इन फ्रंटलाईन स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं ने कड़ी मेहनत एवं लगन के साथ अभूतपूर्व सेवाएं देते हुए अपना फर्ज निभाया है। उन्होने सभी फ्रंटलाईन स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं की कोविड-19 के दौरान अथक सेवाओं के लिए सराहना की और सभी को मिठाई के पैकेट देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में कोविड-19 से संबंधित सभी नियमों का पालन किया गया। कार्यक्रम में कोयला भवन मुख्यालय के उच्चाधिकारियों के साथ ही डॉ. आर.के. ठाकुर मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी सी.एच.डी, डॉ. सुजाता होता, मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी, डॉ एन.के पांडेय आदि भी उपस्थित रहे।

कोरोना से मृत कर्मियों के आश्रितों के साथ परामर्श सत्र का आयोजन

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड में दिनांक 25 जून, 2021 को श्री पी वी के आर एम राव, निदेशक (कार्मिक) की अध्यक्षता में सामुदायिक भवन, कोयला नगर में कोरोना की द्वितीय लहर के दौरान कंपनी के मृत कर्मियों के आश्रितों के साथ एक परामर्श सत्र आयोजित किया गया। इस परामर्श सत्र के दौरान निदेशक (कार्मिक) द्वारा उपस्थित प्रत्येक आश्रित के साथ व्यक्तिगत रूप से संवाद करके उनकी समस्याओं के बारे में पूछा गया। इन समस्याओं के निराकरण के लिए मौके पर मौजूद अधिकारियों को निर्देशभी दिए गए। निदेशक (कार्मिक) ने क्षेत्रीय अधिकारियों को आश्रित पारिवारिक सदस्यों के नियोजन संबंधी प्रक्रिया को जल्द पूर्ण करने और अन्य दावों/ भुगतान को शीघ्र प्राप्त करने में मदद करने के लिए निर्देश दिया।

बीसीसीएल में कोविड-19 टीकाकरण की शुरुआत

दिनांक 01.04.2021 से केंद्रीय चिकित्सालय धनबाद (सीएचडी), बीसीसीएल में 45 वर्ष या उससे अधिक आयु वर्ग के लोगों के लिए कोविड-19 टीकाकरण अभियान की शुरूआत की गई। कंपनी द्वारा इस टीकाकरण अभियान के तहत पर्याप्त संख्या में कोविड-19 टीके और स्वास्थ्यकर्मियों की उपलब्धता सुनिश्चित की गई, ताकि कंपनी के कर्मचारियों, आउटसोर्सिंग कर्मियों एवं धनबाद के नागरिकों के लिए टीकाकरण की प्रक्रिया को सुचारु एवं सुविधाजनक बनाया जा सके। इस टीके को लेने के लिए पात्र व्यक्ति को अपने आधार कार्ड के माध्यम से सरकार द्वारा अधिसूचित वेबसाईट 'cowin.gov.in' पर स्वयं का पंजीकरण कराना होता है।

कार्यशाला : कोविड-19 के समय मानसिक स्वास्थ्य एवं आध्यात्मिकता

कोविड -19 महामारी के दौरान उत्पन्न वर्तमान परिस्थितियों और विषम चुनौतियों में शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान देना अत्यंत आवश्यक है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए मानव संसाधन विकास विभाग, बीसीसीएल द्वारा दिनांक 26.06.2021 को 'कोविड-19 के समय मानसिक स्वास्थ्य एवं आध्यात्मिकता' विषय पर एक ऑनलाइन कार्यशाला का आयोजन किया गया। पहले सत्र में डॉ. नंद कुमार, प्रोफेसर, मनोरोग चिकित्सा, एम्स नई दिल्ली ने विषय पर अपना व्याख्यान दिया और दूसरे सत्र में डॉ. एम. के बिमल, एयरपोर्ट निदेशक, सफदरजंग एयरपोर्ट ने मुख्य वक्ता के रूप में अपन व्याख्यान दिया। दोनों ही वक्ताओं ने मानसिक संतुलन प्राप्त करने के कई तरीके जैसे ध्यान, स्वस्थ जीवन शैली, सकारात्मक आदतें, शारीरिक गतिविधियों और योग आदि के बारे में प्रतिभागियों को विस्तार से बताया। इस कार्यशाला में क्षेत्रों और मुख्यालय बीसीसीएल के 50 अधिकारियों ने भाग लिया

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड के कोयला नगर स्थित सामुदायिक भवन मे दिनांक 8 मार्च, 2021 को अंतरर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर भारत कोकिंग कोल लिमिटेड की

महिला सदस्यों द्वारा प्रश्नोतरी प्रतियोगिता के साथ ही विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर केंद्रीय चिकित्सालय में दिनांक 08.03.2021 से 16.03.2021 तक कैंसर जाँच के लिए नि:शुल्क शिविर का आयोजन भी किया गया। महिला दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रमों में श्रीमती माधुरी सिंह, उप प्रबंधक (कार्मिक), डॉ. स्मिता श्रीवास्तव, उप मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी, श्रीमती श्रद्धा प्रसाद, श्रीमती केया मुखर्जी, वरीय प्रबंधक (कार्मिक) श्रीमती अर्चना कुमारी, श्रीमती प्रिया सिंह और श्रीमती किरण रानी नायक आदि का सक्रिय योगदान रहा।

'महिला सशक्तिकरण' विषय पर ऑनलाइन कार्यशाला

मानव संसाधन विकास विभाग बीसीसीएल द्वारा दिनांक 23.06.2021 को 'महिला सशक्तिकरण' विषय पर एक ऑनलाइन कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्देश्य विशेष रूप से कंपनी में कार्यरत महिलाओं के कार्य और जीवन में संतुलन को बढ़ावा देने और उन्हें बड़े दायित्त्वों को संभालने के लिए प्रेरित करना था। इस कार्यशाला में क्षेत्रों और बीसीसीएल मुख्यालय से 30 महिला अधिकारियों ने भाग लिया। पहले सत्र में डॉ. स्मिता श्रीवास्तव, सीएमओ केंद्रीय चिकित्सालय, धनबाद द्वारा महिला सशक्तिकरण और इसमें शारीरिक और मानसिक दोनों तरह के अच्छे स्वास्थ्य की भूमिका के बारे में विस्तार से बताया गया। द्वितीय सत्र में श्रीमती मीता चौधरी, मुख्य प्रबंधक (सिविल) एसईसीएल, बिलासपुर द्वारा वक्तव्य दिया गया।

महिलाओं के बीच व्यक्तिगत स्वच्छता जागरूकता अभियान

कोविड -19 मामलों की हालिया वृद्धि को ध्यान में रखते हुए, बीसीसीएल ने कंपनी के परिधीय गांवों में महिलाओं और लड़कियों के बीच व्यक्तिगत स्वच्छता के बारे में जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से एक अभियान चलाया गया। 'आजादी का अमृत महोत्सव' के तहत चलाये गए इस अभियान में निकटवर्ती करमाटांड़ गांव में सीएसआर विभाग की टीम ने उपस्थित महिला प्रतिभागियों को जागरूक किया और उन्हें "आजादी का अमृत महोत्सव" अभियान के बारे में भी बताया। इस आयोजन में कार्मिक नगर अस्पताल की डॉक्टर शास्वती पंडित की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

समर्पण महिला समिति द्वारा सेवाकार्य

बीसीसीएल की समर्पण महिला समिति द्वारा दिनांक 23.03.2021 को लालमणि वृद्धाश्रम में बेसहारा एवं अकेला छोड़ दिए गये बुजुर्गों के बीच जाकर होली की खुशियाँ मनाई। समिति

की सदस्यों ने राशन, फल एवं मिठाई के साथ ही अन्य जरूरी सामान का वितरण किया। समिति की अध्यक्षा श्रीमती विमला प्रसाद ने वृद्धजनों को गुलाल लगाकर होली की शुभकामनाएं दी और साथ ही श्रीमती मिली दत्ता और श्रीमती संगीता गोस्वामी ने मिठाई खिला कर सभी का मुह मीठा कराया। तत्पश्चात वृद्धाश्रम के बुजुगों ने भी पूरे उत्साह एवं उमंग के साथ गीत गाकर अपनी खुशियाँ व्यक्त कीं। इस अवसर पर समिति के सदस्यों में श्रीमती चेतना कुमार, श्रीमती आशा दुबे, श्रीमती सीमा सिन्हा, श्रीमती संचिता तालुकदार, श्रीमती नीरू सिन्हा एवं श्रीमती रश्मि कुमार आदि उपस्थित थी।

स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड के सिजुआ स्टेडियम में दिनांक 15 अगस्त 2021 को देश के 75वें स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह का शुभारंभ कंपनी के निदेशक (तकनीकी) संचालन श्री चंचल गोस्वामी ने तिरंगा फहराकर किया। इसके पहले कोयला भवन मुख्यालय में निदेशक (वित्त) श्री समीरन दत्ता ने तिरंगा फहराकर समारोह की शुरुआत की। इस अवसर पर कंपनी के निदेशक (कार्मिक) श्री पी.वी.के.आर. मल्लिकार्जुन राव, मुख्य सतर्कता पदाधिकारी श्री कुमार अनिमेष, केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के उपमहानिरीक्षक श्री विनय काजला के अतिरिक्त अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे। समारोह में कोविड-19 से संबधित सभी दिशा-निर्देशों का पूर्णतः अनुपालन किया गया।

बीसीसीएल में 'आजादी का अमृत महोत्सव' कार्यक्रम की शुरुआत

भारत सरकार ने देश के स्वतंत्रता सेनानियों की स्मृति में आजादी के 75वें वर्ष के उपलक्ष्य में 'अमृत महोत्सव' के आयोजन की पहल की है। इस आयोजन के अन्य उद्देश्य स्वच्छता अभियान को बढ़ावा देना, व्यक्तिगत स्वच्छता उपायों के प्रति जागरूकता, पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना और सभी के लिए स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने के साथ ही स्वदेशी एवं जैविक खेती के तरीकों को बढ़ावा देना आदि भी हैं।

बीसीसीएल के निदेशक (कार्मिक) श्री पी.वी.के.आर.एम. राव के नेतृत्व में दिनांक12.03.2021 को 'भारत का अमृत महोत्सव' कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। इस अवसर पर विभागाध्यक्ष (विधि) डॉ. के. एस. सिन्हा ने भारत के स्वतंत्रता सेनानियों के संघर्षों को विस्तार से बताते हुए एक संक्षिप्त भाषण दिया। इस आयोजन के तहत बीसीसीएल में विभिन्न आयोजनों की शुरुआत की गयी। कार्यक्रम का आयोजन सीएसआर विभाग के महाप्रबंधक श्री बी. एस. घोष के मार्गदर्शन में किया गया।

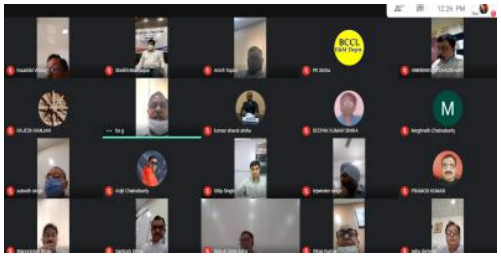

बीसीसीएल आपके द्वार

कंपनी में तमाम लंबित समस्याओं के त्वरित निष्पादन के उद्देश्य से निदेशक (कार्मिक) द्वारा "बीसीसीएल आपके द्वार"पहल की शुरूआत की है। इस पहल के आरम्भ में दिनांक 03.04.2021 को कोयला नगर स्थित अन्नपूर्णा सभागार में निदेशक (कार्मिक) द्वारा "बीसीसीएल आपके द्वार" योजना के अंतर्गत लोदना क्षेत्र में नियोजन से संबंधित लंबित 27 मामलों की समीक्षा की गई और 5 मामलों का मौके पर ही निष्पादन कर दिया गया। अन्य दावेदारों को आवश्यक कागजात सहित मुख्यालय में उपस्थित होने के लिए कहा गया। अन्य मामलों को भी जल्द सुलझाने हेतु संबंधित विभाग को आवश्यक दिशानिर्देश दिये गये।

इस अवसर पर श्री एस. एन. सिन्हा, महाप्रबंधक (का एवं औ. सं.), श्री विद्युत साहा, महाप्रबंधक (श्रम शक्ति एवं नियोजन), श्री सुनील कुमार, उप महाप्रबंधक (प्रशासन/जनसंपर्क) तथा संबंधित क्षेत्र के अन्य अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित रहे।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयंती समारोह

भारत रत्न बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर की 130 वीं जयंती के अवसर पर दिनांक 14.04.2021 को भारत कोकिंग कोल लिमिटेड द्वारा एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कोयला नगर स्थित डॉ. अम्बेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया। इस अवसर पर कंपनी के निदेशक मंडल के साथ मुख्यालय के महाप्रबंधक/विभागाध्यक्ष एवं अन्य अधिकारी, कर्मचारी उपस्थित रहे।

आतंकवाद विरोध दिवस का आयोजन

दिनांक 21 मई, 2021 को आतंकवाद विरोध दिवस के अवसर पर कोयला भवन मुख्यालय में एक शपथ ग्रहण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में श्री चंचल गोस्वामी, निदेशक (तक.) संचालन, श्री पी.वी.के.आर.एम राव, निदेशक (कार्मिक) तथा श्री कुमार अनिमेष, मुख्य सतर्कता अधिकारी द्वारा मुख्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंसा को बढ़ावा देने वाली सभी बुरी ताकतों के खिलाफ सामूहिक रूप से लड़ने और शांति बनाये रखने के लिए शपथ दिलायी गयी। इस अवसर पर मुख्यालय, कोयला भवन के महाप्रबंधक/विभागाध्यक्ष तथा कर्मचारीगण मौजूद थे।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

दिनांक 21.06.2021को 'अंतरराष्ट्रीय योग दिवस' के अवसर पर बीसीसीएल सामुदायिक भवन, कोयला नगर स्थित अन्नपूर्णा सभागार में कार्यक्रम-सह-योग शिविर का आयोजन किया गया। कोविड-19 नियमों का पालन करते हुए कार्यक्रम में कंपनी के अनेक अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। योग शिविर में निदेशक (तकनीकी/संचालन) श्री चंचल गोस्वामी, निदेशक (वित्त)श्री समीरन दत्ता और निदेशक (कार्मिक) श्री पी.वी.के.आर. मल्लिकार्जुन राव उपस्थित हुए। निदेशक (तकनीकी/ संचालन) श्री गोस्वामी ने अपने संबोधन में कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को कम से कम 30 मिनट योग अवश्य करना चाहिये। भारत में योग की एक समृद्ध परंपरा रही है। कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों ने प्रतिदिन योग अभ्यास करने की शपथ भी ली।

'तनाव प्रबंधन' पर कार्यशाला

कोयला खनन जैसे अधिक चुनौतीपूर्ण कार्य में संलग्न कंपनी के अधिकारियों व कर्मचारियों के मानसिक स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए ब्रह्मकुमारी संस्थान की मदद से "कार्यस्थल पर तनाव प्रबंधन" विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का संयोजन सीएसआर विभाग द्वारा किया गया था। इस दौरान कोविड-19 से संबंधित सभी दिशा-निर्देशों व सुरक्षा नियमों का अनुपालन किया गया। उपस्थित वक्ताओं ने कहा कि वर्तमान परिस्थितियों में कोविड काल के दौरान ऐसी कार्यशालाओं का आयोजन और भी अधिक प्रासंगिक हो जाता है।

नाज़ है इन पर

नाम - सुश्री स्वीटी मंडल
अंक - 98.8 % , 12वीं विज्ञान वर्ग (सीबीएसई)
स्थान - धनबाद जिले में प्रथम
अभिभावक - श्रीमती मुक्ता मंडल,
प्रशासन विभाग, कोयला भवन, मुख्यालय

नाम - सुश्री शिवांगी प्रिया
अंक - 98.2 % (आईसीएसई बोर्ड)
स्थान - धनबाद जिले में तृतीय
अभिभावक - श्री सत्येन्द्र कुमार, महाप्रबंधक
वाशरी निर्माण विभाग कोयला भवन, मुख्यालय

नाम - सुश्री स्नेहा कुमारी
अंक - 98.8 % (सीबीएसई)
अभिभावक - श्री भुनेश यादव,
वाइंडिंग इंजन ऑपरेटर, गोपालीचक

नाम - सुश्री सीमा कुमारी
अंक - 98.2 %
अभिभावक - श्री गोविन्द यादव,
हाजिरी बाबु, गोपालीचक

बीसीसीएल के निदेशक (कार्मिक) श्री पी.वी.के.आर. मल्लिकार्जुन राव ने सभी विद्यार्थियों के उत्कृष्ट प्रदर्शन पर प्रसन्नता व्यक्त की और कहा कि इनके परिणाम ने संपूर्ण बीसीसीएल को गौरवान्वित किया है। इसके अलावा, निदेशक (कार्मिक) ने सभी विद्यार्थियों के घर जाकर उनसे व्यक्तिगत रूप से मुलाकात की और उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं व्यक्त कीं। निदेशक (कार्मिक) के साथ उप-महाप्रबंधक (प्रशासन/जनसंपर्क) श्री सुनील कुमार उपस्थित रहे।

हिंदी में प्रथम

1	हिंदी का प्रथम कवि	सरहपा (9वीं शताब्दी)
2	खड़ी बोली हिंदी के प्रथम कवि	अमीर खुसरो
3	हिंदी के सर्वप्रथम कोशकार	अमीर खसरो (खालिकबारी)
4	हिंदी का प्रथम महाकाव्य	पृथ्वीराजरासो (चंदबरदाई)
5	हिंदी खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य	प्रियप्रवास (हरिऔध)
6	हिंदी खड़ी बोली गद्य की प्रथम रचना	चंद छंदबरनन की महिमा (गंग कवि)
7	हिंदी खड़ी बोली का प्रथम गद्य ग्रंथ	भाषायोग वाशिष्ठ (रामप्रसाद निरंजनी)
8	हिंदी का प्रथम चम्पू काव्य	राउलवेल (रोड)
9	हिंदी के प्रथम गीतकार	विद्यापति
10	हिंदी की प्रथम कवयित्री	मीराबाई
11	हिंदी खड़ी बोली का प्रथम काव्य ग्रंथ	एकांतवासी योगी (श्रीधर पाठक)
12	मुक्त छंद के प्रथम प्रयोक्ता	निराला (जुही की काली)
13	हिंदी में रीति काव्य का प्रथम ग्रंथ	हिततरंगिनी (कृपाराम)
14	हिंदी का प्रथम मौलिक नाटक	नहुष (गोपालचंद)
15	हिंदी का प्रथम अभिनीत नाटक	जानकी मंगल (शीतला प्रसाद त्रिपाठी)
16	हिंदी की प्रथम एकांकी	एक घूँट (जयशंकर प्रसाद)
17	हिंदी की प्रथम अतुकांत रचना	प्रेमपथिक (जयशंकर प्रसाद)
18	हिंदी का प्रथम गद्यकाव्य	साधना (रायकृष्णदास)
19	हिंदी की प्रथम मौलिक कहानी	इंदुमती (किशोरीलाल गोस्वामी)*
20	हिंदी का प्रथम मौलिक उपन्यास	परीक्षागुरु (श्रीनिवास दास)
21	हिंदी की प्रथम महिला उपन्यासकार	साध्वी सतीप्राण अबला (मल्लिका देवी) सुहासिनी
22	हिंदी की प्रथम आत्मकथा	अर्द्धकथानक (बनारसीदास)
23	हिंदी का प्रथम मानक जीवनी ग्रंथ	कलम का सिपाही (अमृतराय)
24	हिंदी का प्रथम यात्रा संस्मरण	लंदन यात्रा (श्रीमती हरदेवी, 1883)
25	हिंदी का प्रथम रिपोर्ताज	लक्ष्मीपुरा (शिवदान सिंह चौहान)
26	हिंदी का प्रथम संस्मरण	पद्मपराग (पद्मसिंह शर्मा)
27	हिंदी आलोचना की प्रथम पुस्तक	समालोचना समुच्चय (महावीर प्रसाद द्विवेदी)
28	हिंदी नाटक का प्रथम सैद्धांतिक ग्रंथ	रूपकरहस्य (श्यामसुंदर दास)
29	हिंदी के प्रथम व्याकरणकार	जे.जे. केटलर (हॉलैंड) [हिंदुस्तानी ग्रामर डच भाषा में]
30	हिंदी भाषा में हिंदी का प्रथम व्याकरण	हिंदी भाषा का व्याकरण (1827 ई.) लेखक - पादरी एम. टी. ऐडम
31	हिंदी का प्रथम भारतीय व्याकरण	पं. श्रीलाल (भाषा चंद्रोदय, 1855)
32	राजभाषा आयोग के प्रथम अध्यक्ष	बी.जी खेर
33	हिंदी साहित्य परिषद के प्रथम अध्यक्ष	पुरुषोत्तम दास टंडन
34	राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के प्रथम अध्यक्ष	इब्राहिम अलकाजी
35	हिंदी में प्रथम डी-लिट उपाधि प्राप्तकर्ता	डॉ. पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल
36	नागरी प्रचारिणी सभा के प्रथम सभापति	राधाकृष्ण दास
37	नागरी लिपि सुधार समिति के प्रथम सभापति	महात्मा गांधी (1935)
38	देवनागरी लिपि सुधार समिति के प्रथम अध्यक्ष	आचार्य नरेन्द्र देव (1947)
39	हिंदुस्तानी के स्थान पर 'हिंदी' शब्द के सर्वप्रथम प्रयोक्ता	गिलक्राइस्ट
40	खड़ी बोली' शब्द के प्रथम प्रयोक्ता	लल्लूलाल

हम करते हैं पर्यावरण के अनुकूल खनन

बीसीसीएल ने कोयला उत्पादन बढ़ाने के लिए अपने खनन कार्य में तीन सौ टन क्षमता के डंपर, एक हाइड्रोलिक शॉवेल और तीन डोजरों को शामिल किया है।

मुनीडीह भूमिगत खदान में कामगारों को आने-जाने के लिए 'मोनोरेल मैन-राइडिंग सिस्टम' की स्थापना की गयी है: भारत में पहली बार।

बीसीसीएल ने अपने क्षेत्र में स्थित गाँवों में जलापूर्ति के लिए झारखंड सरकार के साथ समझौता किया है।

बीसीसीएल विस्तरीय पारिस्थितिक पुनर्स्थापन करने में अग्रणी कंपनी है।

आधुनिक उपकरणों एवं सुविधाओं से युक्त बीसीसीएल का केंद्रीय अस्पताल सेवारत कर्मचारियों के साथ-साथ अपने हितधारकों को भी सेवा उपलब्ध करा रहा है।

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

एक मिनीरत्न कंपनी

(कोल इण्डिया लिमिटेड का एक अंग)

कोयला भवन, कोयला नगर, धनबाद – 826005

सीआईएन : U10101JH1972GOI000918

FACEBOOK/BCCLOFFICIAL TWITTER/BCCLOFFICIAL HTTP://WWW.BCCLWEB.IN/

Verma Enterprises, 94313 14776